तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

रूपान्तरित शिक्षण, समृद्ध अधिगम:

प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह स्मारिका

के.वि.सं.
में
व्यावसायिक अधिगम सशक्तता

संकल्पना से सृजनात्मकता तक: शिक्षक प्रशिक्षण की नई परिभाषा

प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह का उद्घाटन संबोधन

प्रशिक्षण और निरंतर विकास, के.वि.सं. की उत्कृष्ट उपलब्धि का मुख्य आधार हैं। बदलती दुनिया के साथ हमारे शिक्षक लगातार नई चीज़ें सीख रहे हैं। वे आपस में मिलकर, सोच-विचार कर और नये तरीकों को अपनाकर ऐसी शिक्षण पद्धतियाँ बना रहे हैं, जो सभी के लिए उपयोगी, प्रभावी और लंबे समय तक चलने वाली हैं।

जैसे-जैसे शिक्षा में तकनीक और एआई की भूमिका बढ़ रही है, के.वि.सं. के शिक्षक मजबूत मार्गदर्शक के रूप में विद्यार्थियों का हर पहलू से मार्गदर्शन कर रहे हैं। एनईपी 2020 के अनुरूप, संगठन आनंदमय, समावेशी और कौशल-आधारित कक्षाएँ विकसित कर रहा है। SAFAL और PARAKH से मिली समझ के आधार पर विशेष रूप से बुनियादी भाषा, गणना और मूल्यांकन के क्षेत्र को मजबूत किया जा रहा है और यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि ये सुधार लंबे समय तक टिके रहें और पूरे सिस्टम में इन्हें आसानी से लागू किया जा सके।

विद्यालयों में क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसमें समावेशी शिक्षण, कला, खेल आधारित शिक्षण और व्यावसायिक शिक्षा पर ज़ोर दिया जाता है। इससे शिक्षक आधुनिक तरीकों से सीखते रहते हैं और इन्हें पूरे सिस्टम में प्रभावी रूप से लागू किया जा सकता है।

प्रशिक्षण और विकास सप्ताह को नवाचार प्रदर्शित करने, सहकर्मी शिक्षण को बढ़ावा देने और प्रशिक्षण को प्रभावी व स्थायी कक्षाओं में बदलने के उद्देश्य से एक सशक्त मंच के रूप में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर भाग लेने वाले सभी शिक्षकों को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ, जिनकी निष्ठा विद्यार्थियों के सीखने को समृद्ध बनाती है और पूरे के.वि.सं. परिवार को प्रेरणा देती है।

प्राची पांडे
उपाध्यक्ष, के. वि. सं.
एवं
संयुक्त सचिव, डीओएसईएल

संदेश

शिक्षा व्यवस्था तभी प्रगति करती है जब शिक्षक निरंतर सीखते हैं, पुराने दृष्टिकोणों का त्याग करते हैं और नए तरीकों को अपनाते हैं। केन्द्रीय विद्यालय संगठन में व्यावसायिक विकास केवल एक एकल आयोजन नहीं, बल्कि एक सतत प्रक्रिया है, जो प्रत्येक स्तर पर कक्षा-शिक्षण और नेतृत्व को सुदृढ़ बनाती है। इस स्मारिका में संकलित पहलें हमारे सभी क्षेत्रीय कार्यालयों एवं ज़ीईट्स द्वारा शिक्षार्थियों की बदलती आवश्यकताओं और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप विचारपूर्वक तैयार किए गए उद्देश्यपूर्ण एवं अभ्यास-केन्द्रित कार्यक्रमों का जीवंत प्रतिबिंब हैं।

इस वर्ष अक्टूबर में आयोजित प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह ने इस मिशन में नई ऊर्जा का संचार किया है। यह सप्ताह राष्ट्रव्यापी स्तर पर चिंतन, नवाचार तथा उत्कृष्ट शिक्षण–अध्यापन पद्धतियों के आदान–प्रदान के लिए एक समान मंच प्रदान करता है। इससे ऐसे व्यावसायिक शिक्षण समुदायों का निर्माण हुआ है, जो मिलकर सोचते हैं, अनुभव साझा करते हैं और निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं।

मैं सभी प्रशिक्षकों, मार्गदर्शकों तथा सहभागी शिक्षकों को उनके उत्कृष्ट समर्पण के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि यह संकलन निरंतर सुधार की भावना को प्रेरित करेगा और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति हमारी जिम्मेदारी को पुनः दृढ़ बनाएगा।

विकास गुप्ता, *भा.प्र.से.*
आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के कार्यान्वयन के उपरांत शिक्षण–अधिगम परिदृश्य में अभूतपूर्व और गुणात्मक परिवर्तन परिलक्षित हुआ है। शिक्षण की परंपरागत सीमाओं से आगे बढ़ते हुए आज कक्षाएँ नवीन कार्यविधियों, अभिनव शैक्षिक अभ्यासों तथा तकनीकी प्रयोगों के माध्यम से सशक्त और जीवंत अधिगम–केंद्रों के रूप में विकसित हो चुकी हैं। इस परिवर्तन की धुरी हमारे शिक्षक हैं—जिन्होंने निरंतर सीखते हुए स्वयं को पुनर्परिभाषित किया है और नये शैक्षिक मानकों के अनुरुप अपने कौशल का उन्नयन किया है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा शिक्षक सशक्तिकरण के लिए व्यापक स्तर पर क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का संचालन किया जाता रहा है, जिनके माध्यम से शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण विधियों, डिजिटल उपकरणों और नवोन्मेषी अध्यापन शैलियों से परिचित कराया गया है । परिणामस्वरूप कक्षाओं में रचनात्मकता, सहभागिता और अनुभवजन्य अधिगम का वातावरण विकसित हुआ है—जहाँ विद्यार्थी केवल ज्ञान का उपभोग नहीं, बल्कि खोज, प्रयोग और सृजन की प्रक्रिया के सहभागी बन रहे हैं।

इन्हीं उत्कृष्ट प्रयासों के सम्मान और प्रेरणा के उद्देश्य से 'प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह' का आयोजन किया गया, जो शिक्षकों की साधना, समर्पण और नवाचार का उत्सव है। इस अवसर पर शिक्षकों ने अपनी सर्वोत्तम शैक्षिक प्रथाओं का प्रदर्शन किया तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं—आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान (FLN) पाठ–योजना, नवाचारी शिक्षण–विधियाँ, समावेशी पाठ–योजना तथा कला–एकीकृत शिक्षण—के माध्यम से अपनी सृजनशीलता और दक्षता का परिचय दिया।

यह स्मारिका उन्हीं प्रेरक प्रयासों का सार है, जो न केवल श्रेष्ठ शैक्षिक अनुभवों का संकलन प्रस्तुत करती है, बल्कि भावी पीढ़ी के शिक्षकों को नवाचार की राह पर अग्रसर होने की प्रेरणा भी देती है।

सभी प्रतिभागी शिक्षकों को हार्दिक शुभकामनाएँ और आयोजक दल को इस सार्थक पहल के लिए बधाई।

शुभकामनाओं सहित

चंदना मण्डल
अपर आयुक्त (शैक्षणिक)

शिक्षा केवल सूचना का आदान–प्रदान नहीं, बल्कि व्यक्ति की संवेदना, विवेक और दृष्टि का विस्तार है। यह अतीत के अनुभवों से वर्तमान को समझने और भविष्य को आकार देने की प्रक्रिया है। जब दुनिया नई तकनीकों, नई सोच और नई चुनौतियों के साथ निरन्तर बदल रही है, तब शिक्षण–प्रक्रिया का भी उतना ही जाग्रत और प्रासंगिक होना आवश्यक है। इस परिवर्तनशील परिदृश्य में शिक्षक का अद्यतन रहना एक विकल्प नहीं, बल्कि दायित्व है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को केवल नए तकनीकों से परिचित नहीं कराते हैं , बल्कि उन्हें नवाचार अपनाने, प्रयोग करने और आत्मावलोकन की संस्कृति विकसित करने का अवसर प्रदान करते हैं। ये कार्यक्रम शिक्षण को एक जीवंत अनुभव में बदल देते हैं, जहाँ सीखना बोझ नहीं, खोज बन जाता है। प्रशिक्षण शिक्षक को अधिक आत्मविश्वासी, सक्षम और दूरदर्शी बनाता है। ये कार्यक्रम विषय-बोध को गहराते हैं और कक्षा को प्रयोगशाला में बदलने की दृष्टि प्रदान करते हैं, जहाँ जिज्ञासा, संवाद और शोध का वातावरण बनता है। प्रशिक्षण शिक्षकों को बदलती शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरुप ढलना सिखाता है और उन्हें आत्मविश्वास तथा प्रवीणता के साथ आगे बढ़ने की शक्ति देता है। यही निरंतर अधिगम शिक्षकों को समय की मांगों पर खरा उतरने वाला प्रभावी मार्गदर्शक बनाता है।

मुझे विश्वास है कि हमारे शिक्षकों का क्षमता संवर्धन ही केंद्रीय विद्यालय संगठन की आने वाली पीढ़ियों के भविष्य की दिशा तय करेगा।। वर्तमान में किया गया समर्पित निवेश ही कल की सशक्त, संवेदनशील और सक्षम शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला बनेगा।

शुभकामनाओं सहित

नगेंद्र गोयल
संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण)

विषय-सूची

प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह का उद्घाटन संबोधन 3

आयुक्त का संदेश........ 4

अपर आयुक्त का संदेश 5

संयुक्त आयुक्त का संदेश 5

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, प्रशिक्षण विभाग: पृष्ठभूमि 7

- के.वि.सं. में प्रशिक्षण का इतिहास
- के.वि.सं. प्रशिक्षण विभाग की दृष्टि एवं मिशन
- के.वि.सं. में प्रशिक्षण का विकास – समयरेखा
- प्रशिक्षण विभाग की संरचना एवं प्राधिकार-क्षेत्र

के.वि.सं. में प्रशिक्षण एवं क्षमता-विकास का मार्गदर्शन करने वाले प्रमुख विषय

के.वि.सं. प्रशिक्षण व्यवस्था का समग्र अवलोकन........ 13

- आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
- वर्ष 2025–26 में आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (ज़ीट) का संक्षिप्त परिचय

विशेष फीचर : प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह 16

- प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह: के.वि.सं. की प्रशिक्षण यात्रा का स्वाभाविक विस्तार
- प्रशिक्षण की विरासत जिसने टी एंड डी सप्ताह को आकार दिया

प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह की प्रमुख गतिविधियाँ एवं आयोजन 20

- कला-समेकित(Samriddhi) प्रतियोगिताएँ
- आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान पाठ-योजना
- समावेशी (Inclusive) पाठ योजना
- नवाचारी शिक्षण-पद्धतियाँ
- वेबिनार

ज़ीट निदेशकों की अभिव्यक्तियाँ 26

प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह: शिक्षकों की प्रतिपुष्टि 27

प्रशिक्षण विभाग के अन्य आयाम........ 28

- के.वि.सं. में प्रशिक्षण आवश्यकता विश्लेषण (TNA)
- के.वि.सं. (KVS) में अल्पावधि कोर्स
- विद्यार्थी सहायता सामग्री
- के.वि.सं. में शोध द्वारा रूपांतरण
- शिक्षक-सहायक सामग्री एवं प्रशिक्षण पुस्तिकाओं/मॉड्यूलों का निर्माण

उत्कृष्टता का संकलन, नवाचार का प्रस्तुतीकरण........ 33

- प्रशिक्षण प्रभाग: प्रदर्शनी

आभार 35

केंद्रीय विद्यालय संगठन, प्रशिक्षण विभाग पृष्ठभूमि

केन्द्रीय विद्यालय संगठन में प्रशिक्षण का इतिहास

केन्द्रीय विद्यालय संगठन में प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास की अवधारणा 1960 के दशक से ही इसकी कार्यप्रणाली का अभिन्न अंग रही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आधारशिला शिक्षक हैं—इस तथ्य को स्वीकार करते हुए, केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने वर्ष 1979 ई. में संगठित सेवाकालीन प्रशिक्षिण कार्यक्रम आरंभ किया। इस दो सप्ताह के सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम ने केंन्द्रीय विद्यालय संगठन की सर्वव्यापी क्षमता-विकास प्रणाली में सुदृढ नींव की आधारशिला रखी। अल्प समय में ही केंद्रीय विद्यालय संगठन, शिक्षक-प्रशिक्षण के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी संस्था के रूप में उभर कर सामने आया। वर्ष 1987 ई. में, जब मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने शिक्षकों की वित्तीय उन्नति से संबद्ध 21-दिवसीय सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (इन-सर्विस पाठ्यक्रम) को अनिवार्य किया, तब केंद्रीय विद्यालय संगठन इस मॉडल को पूर्णता के साथ लागू करने वाला देश की पहली संस्था बनी। इसकी सुदृढ़ संरचना, शैक्षणिक कठोरता तथा अनुशासित क्रियान्वयन ने इसे राष्ट्रीय पहचान दिलाई। कई वर्षों तक देश के विभिन्न विद्यालय प्रणालियों ने अपने शिक्षकों को 21-दिवसीय प्रशिक्षण हेतु केंद्रीय विद्यालय संगठन में भेजा, जिससे संगठन की व्यावसायिक उत्कृष्टता परिलक्षित हुई।

उभरती शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, 21-दिवसीय प्रारूप में समय-समय पर सुधार किए गए। वर्ष 2006 में शैक्षणिक सलाहकार समिति ने इन 21 दिनों को छोटे घटकों में विभाजित करने तथा सैद्धांतिक प्रशिक्षण को कक्षा-आधारित व्यावहारिक अभ्यासों के साथ एकीकृत करने की अनुशंसा की। इससे प्रशिक्षण अधिक लचीला बना और शिक्षकों की वास्तविक कार्यस्थलीय आवश्यकताओं के अनुरूप हो गया।

वर्ष 2009 में आगे हुए पुनर्गठन के अंतर्गत 12+10 दिवसीय प्रारूप विकसित किया गया, जिसे ग्रीष्म एवं शीतकालीन अवकाश के दौरान आयोजित किया जाता था। यह मॉडल एक दशक से अधिक समय तक प्रचलित रहा और संगठन-व्यापी बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण को सुगम व सरल बनाया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के आगमन के साथ शिक्षक-व्यावसायिक विकास की संरचना में एक बार फिर परिवर्तन करने की आवश्यकता महसूस हुई। इस नीति के अंतर्गत प्रत्येक शिक्षक के लिए प्रतिवर्ष 50 घंटे के सतत् व्यावसायिक विकास (CPD) को अनिवार्य किया गया। इसके परिणामस्वरूप 1980 के दशक में विकसित 21-दिवसीय मॉडल तीव्र गति से बदलते शैक्षणिक परिदृश्य में कम प्रासंगिक हो गया। एन.ई.पी. (NEP) का जोर सतत्, रुचि-आधारित, तकनीक-सक्षम और वर्ष-भर चलने वाले अधिगम पर आधारित था, जिसके लिए अधिक गतिशील सतत् व्यावसायिक विकास (CPD) प्रणाली की आवश्यकता थी।

इस संदर्भ में, केंद्रीय विद्यालय संगठन ने वर्ष 2024 में अपने प्रशिक्षण ढाँचे की व्यापक समीक्षा आरंभ की। विशेषज्ञ परामर्श एवं आंतरिक चर्चाओं में सर्वसम्मति से यह अनुशंसा की गई कि छह-वर्षीय चक्र में संचालित 21-दिवसीय मॉडल को समाप्त कर प्रतिवर्ष 50 घंटे का CPD लागू किया जाए। इससे छह वर्ष में लगभग 300 प्रशिक्षण घंटे सुनिश्चित होंगे—जो पूर्व के 126 घंटों की तुलना में एक महत्वपूर्ण उन्नति है।

यह परिवर्तन केंद्रीय विद्यालय संगठन में व्यावसायिक अधिगम की संस्कृति में एक ऐतिहासिक बदलाव का द्योतक है। केंद्रीकृत, आवधिक प्रशिक्षण मॉडल से आगे बढ़ते हुए, केंद्रीय विद्यालय संगठन अब एक सतत्, विकेन्द्रित एवं बहु-माध्यमीय सतत् व्यावसायिक विकास CPD प्रणाली की ओर अग्रसर है, जो आधुनिक शैक्षणिक आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक प्रभावी और उत्तरदायी है।

प्रशिक्षण विभाग इस विकास प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका निभा रहा है—संरचनाओं को सुदृढ़ करते हुए, ज़ीट एवं क्षेत्रीय कार्यालयों को सहयोग प्रदान करते हुए तथा यह सुनिश्चित करते हुए कि देशभर के प्रत्येक शिक्षक को उच्च-गुणवत्ता और सार्थक व्यावसायिक विकास उपलब्ध हो।

दृष्टि एवं मिशन (Vision and Mission)

केन्द्रीय विद्यालय संगठन में प्रशिक्षण का विकास – समयरेखा

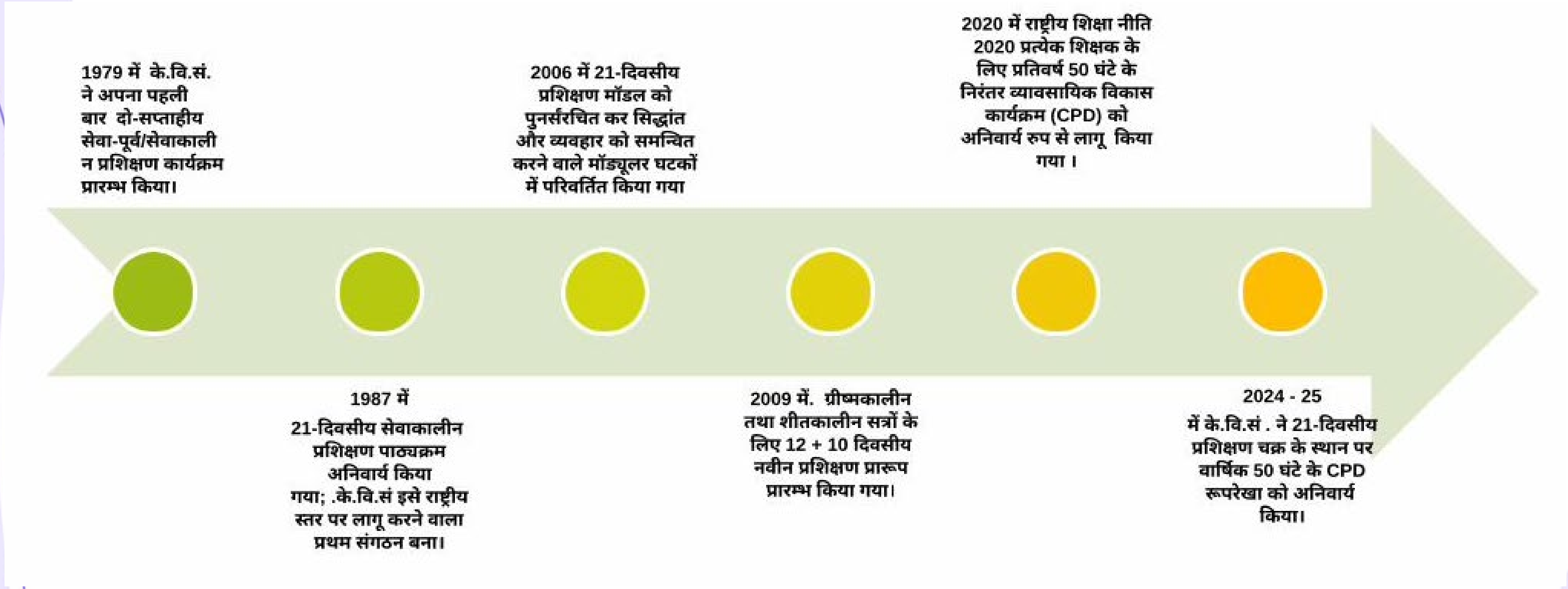

एनईपी 2020 की दृष्टि का व्यावहारिक रूपांतरण

शिक्षक प्रशिक्षण उद्देश्य

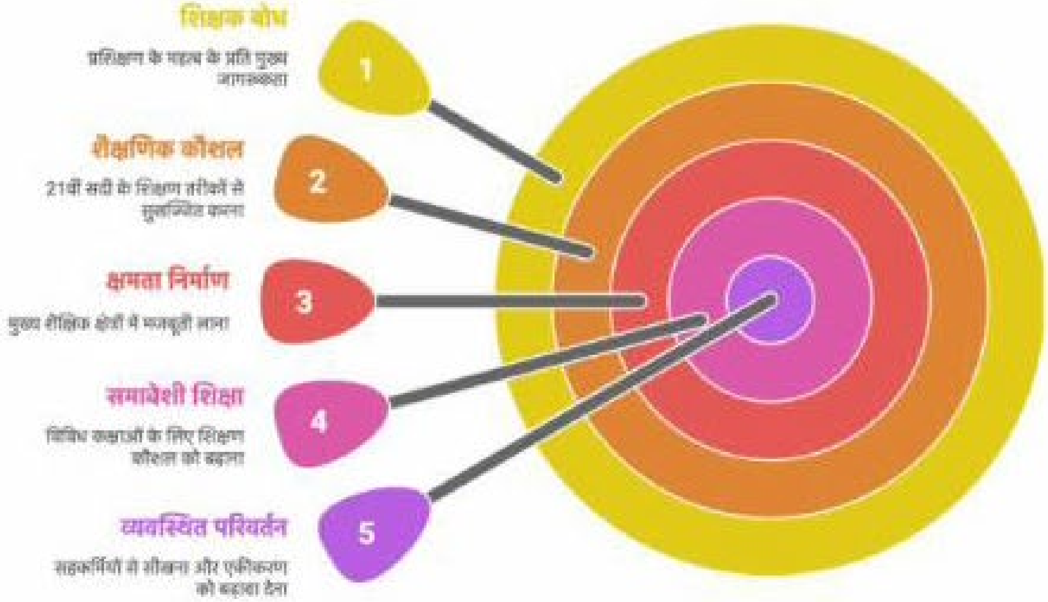

NEP 2020 के अनिवार्य प्रावधान

प्रशिक्षण विभाग की संरचना एवं अधिदेश

केन्द्रीय विद्यालय संगठन का प्रशिक्षण विभाग, देशभर में स्थित एक हजार से अधिक केन्द्रीय विद्यालयों के लिए व्यावसायिक विकास का केंद्रीय समन्वयकारी अंग है। संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण) के मार्गदर्शन में सहायक आयुक्त (प्रशिक्षण) एवं सहायक शिक्षा अधिकारी प्रशिक्षण पहलों की योजनाबद्ध तैयारी, सुव्यवस्थित क्रियान्वयन तथा प्रभावी निगरानी सुनिश्चित करते हैं। यह विभाग आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान Zonal Institutes of Education and Training (ज़ीट)—जो केंद्रीय विद्यालय संगठन के विशिष्ट प्रशिक्षण संस्थान हैं—तथा क्षेत्रीय कार्यालयों के साथ घनिष्ठ सहयोग में कार्य करता है। ज़ीट अपने-अपने क्षेत्रीय समूहों के विद्यालयों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराते हैं, जबकि क्षेत्रीय कार्यालय विद्यालय-स्तरीय कार्यक्रमों के संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार, प्रशिक्षण विभाग एक सुदृढ़ त्रि-स्तरीय संरचना के माध्यम से संगठन के प्रत्येक शिक्षक तक अपनी पहुँच सुनिश्चित करता है।

नीतियों और रूपरेखाओं का निर्माण

- राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 के अनुरूप शिक्षक प्रशिक्षण हेतु।

वृहद स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करना एवं उनका पर्यवेक्षण करना

- जिसमें उन्मुखीकरण पाठ्यक्रम, विषय-विशेष प्रशिक्षण, नेतृत्व प्रशिक्षण एवं क्षमता संवर्धन कार्यक्रम समाहित हैं।

सतत व्यावसायिक विकास (CPD) के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करना

- और सेवाकालीन प्रशिक्षण को कार्यक्रम-आधारित से प्रक्रिया-आधारित अधिगम में रूपांतरित करने का मार्ग प्रशस्त करना।

प्रशिक्षण सामग्री, प्रशिक्षण मॉड्यूल, मार्गदर्शिकाएँ तथा ई-सामग्री का निर्माण

- उत्तम गुणवत्ता की शिक्षण प्रक्रियाओं को सुदृढ़ बनाने हेतु।

प्रशिक्षण व्यवस्था को सशक्त बनाना

- आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (ZIETs) से समन्वय, स्थानीय पहलों के अनुश्रवण तथा विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में समान राष्ट्रीय दृष्टि सुनिश्चित करते हुए।

अनुसंधान, नवाचार और प्रलेखन को प्रोत्साहित करना

- शिक्षण शास्त्र और व्यावसायिक विकास की श्रेष्ठ पद्धतियों पर अनुसंधान, नवाचार और प्रलेखन को बढ़ावा देना।

अनुश्रवण, मान्यता एवं प्रमाणीकरण के लिए प्रणालियों का निर्माण

- शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के 50 घंटों की अवधि को पदोन्नति एवं वेतनवृद्धि से जोड़ने हेतु व्यवस्थाएँ विकसित करना।

अपनी नीतिगत नेतृत्व क्षमता के माध्यम से, प्रशिक्षण विभाग यह सुनिश्चित करता है कि व्यावसायिक विकास समयोचित, प्रासंगिक, उत्तरदायी तथा भविष्योन्मुखी बना रहे—जिससे केंद्रीय विद्यालय संगठन का प्रत्येक शिक्षक निरंतर उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर हो सके और एक चिंतनशील, दक्ष एवं नवाचारी अध्यापक के रूप में विकसित हो।

केंद्रीय विद्यालय संगठन

के.वि.सं. में प्रशिक्षण और क्षमता संवर्धन के प्रमुख आयाम

1. बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान (FLN)

- **NEP 2020 Para 2.1–2.7**
- बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान को राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में सुदृढ़ करना।
- प्रशिक्षण इन क्षेत्रों पर केंद्रित है:
  - आरंभिक साक्षरता
  - ध्वन्यात्मक जागरूकता
  - शब्दावली का विकास
  - पढ़ने और संख्यात्मक कौशल
  - अधिगम सामग्री का उपयोग
  - हर बच्चे में मूलभूत दक्षताओं को सुनिश्चित करना

2. अनुभवात्मक अधिगम हेतु शिक्षण-शास्त्रीय हस्तक्षेप

- **NEP 2020 Para 4.5 – 4.6**
- शिक्षकों को इस प्रकार सक्षम बनाना कि वे:
  - बच्चे की क्षमता के अनुरूप विकसित शिक्षण पद्धतियाँ अपनाएँ
  - हस्तगत गतिविधियों को बढ़ावा दें
  - वास्तविक जीवन परिस्थितियों को जोड़ें
  - बहु-विषयक एवं समावेशी दृष्टिकोण अपनाएँ
  - विद्यार्थियों को सीखने में सक्रिय भागीदारी हेतु प्रोत्साहित करें

3. दक्षता-आधारित अधिगम (CBL) पर आधारित मूल्यांकन

- NEP 2020 Para 4.34 & 4.35
- मूल्यांकन पर ध्यान केंद्रित:

  दक्षता आधारित माप
  अवधारणात्मक (conceptual) समझ
  आलोचनात्मक सोच
  अनुप्रयोग कौशल
  आधारभूत दक्षताओं का आकलन
  सीखने के परिणामों का मापन
  स्मृति पर नहीं, सीखने पर आधारित मूल्यांकन

4. समावेशी शिक्षा

- **NEP 2020 Para 6.1**
- शिक्षकों को प्रशिक्षित करना ताकि वे समावेशी कक्षाएँ बना सकें, जहाँ:
  - विविध शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को समझा जाए
  - अधिगम में भिन्नता (differentiated learning) को अपनाया जाए
  - समावेशी शिक्षण वातावरण विकसित किया जाए
  - संवेदनशीलता और बच्चों की विशेष आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाए

5. कक्षा में प्रौद्योगिकी का प्रयोग

- **NEP 2020 Para 4.29**
- केवीएस प्रौद्योगिकी के एकीकरण को बढ़ावा देता है, जिसमें शामिल है:
  - डिजिटल शैक्षिक साधनों का उपयोग
  - ICT उपकरण
  - LMS, DIKSHA, MOOCs जैसे प्लेटफॉर्म
  - ऑनलाइन एवं मिश्रित (blended) अधिगम
  - इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्म का उपयोग
  - डिजिटल पेडागॉजी एवं तकनीक-सक्षम अधिगम का विकास

6. विद्यार्थियों और शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण

- **NEP 2020 Para 4.29**
- कल्याण को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अंग मानना।
- प्रशिक्षण में शामिल:
  - परामर्श एवं जीवन कौशल (life skills)
  - तनाव प्रबंधन
  - सामाजिक-भावनात्मक अधिगम
  - मानसिक स्वास्थ्य समर्थन
  - शिक्षक–विद्यार्थी संबंधों को सशक्त बनाना

के.वि.सं. प्रशिक्षण व्यवस्था का समग्र अवलोकन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन (KVS) ने एक सुदृढ़, बहु-स्तरीय व्यावसायिक विकास प्रणाली को स्थापित किया है ताकि प्रत्येक शिक्षक और विद्यालय नेतृत्वकर्ता को अर्थपूर्ण और सतत् प्रशिक्षण का समर्थन मिल सके। यह प्रणाली के.वि.सं (मुख्यालय), आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (ज़ीट), क्षेत्रीय कार्यालय और विद्यालयों द्वारा निभाई जाने वाली समन्वित भूमिकाओं के माध्यम से संचालित होता है। ये सभी मिलकर एक गतिशील और अंतर्संबंधित प्रणाली बनाते हैं, जो पूरे देश में शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया को सुदृढ़ करती है।

आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, के.वि.सं. के शैक्षणिक प्रशिक्षण केन्द्रों के रूप में कार्य करते हैं, जो क्षेत्रीय स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की योजना और संचालन के लिए उत्तरदायी हैं। ये संस्थान नवीन पद्धति नवाचार, संसाधन विकास और नेतृत्व प्रशिक्षण के लिए उत्कृष्टता केंद्र के रूप में काम करते हैं। प्रत्येक ज़ीट 4–6 क्षेत्रीय कार्यालयों की देखरेख करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि शिक्षकों की व्यावसायिक विकास आवश्यकताएँ प्रासंगिक और शैक्षणिक रूप से परिपूर्ण हों सके।

आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, के.वि.सं. के प्रशिक्षण दृष्टिकोण को संरचित कार्यक्रमों में संचालित करने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं, जो कक्षा में अभ्यास को बेहतर बनाते हैं, नेतृत्व क्षमता को सशक्त करते हैं और चिंतनपरक व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देते हैं।

आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (ज़ीट) के फीडर क्षेत्र

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की विकास प्रणाली मुख्यालय, ज़ीट,क्षेत्रीय कार्यालय और विद्यालयों में जिम्मेदारियों के समन्वित विभाजन के माध्यम से संचालित होती है। प्रत्येक स्तर, उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण को सुनिश्चित करने में विशिष्ट भूमिका निभाता है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन प्रशिक्षण नेटवर्क: मुख्यालय – क्षेत्रीय कार्यालय – विद्यालय समन्वय

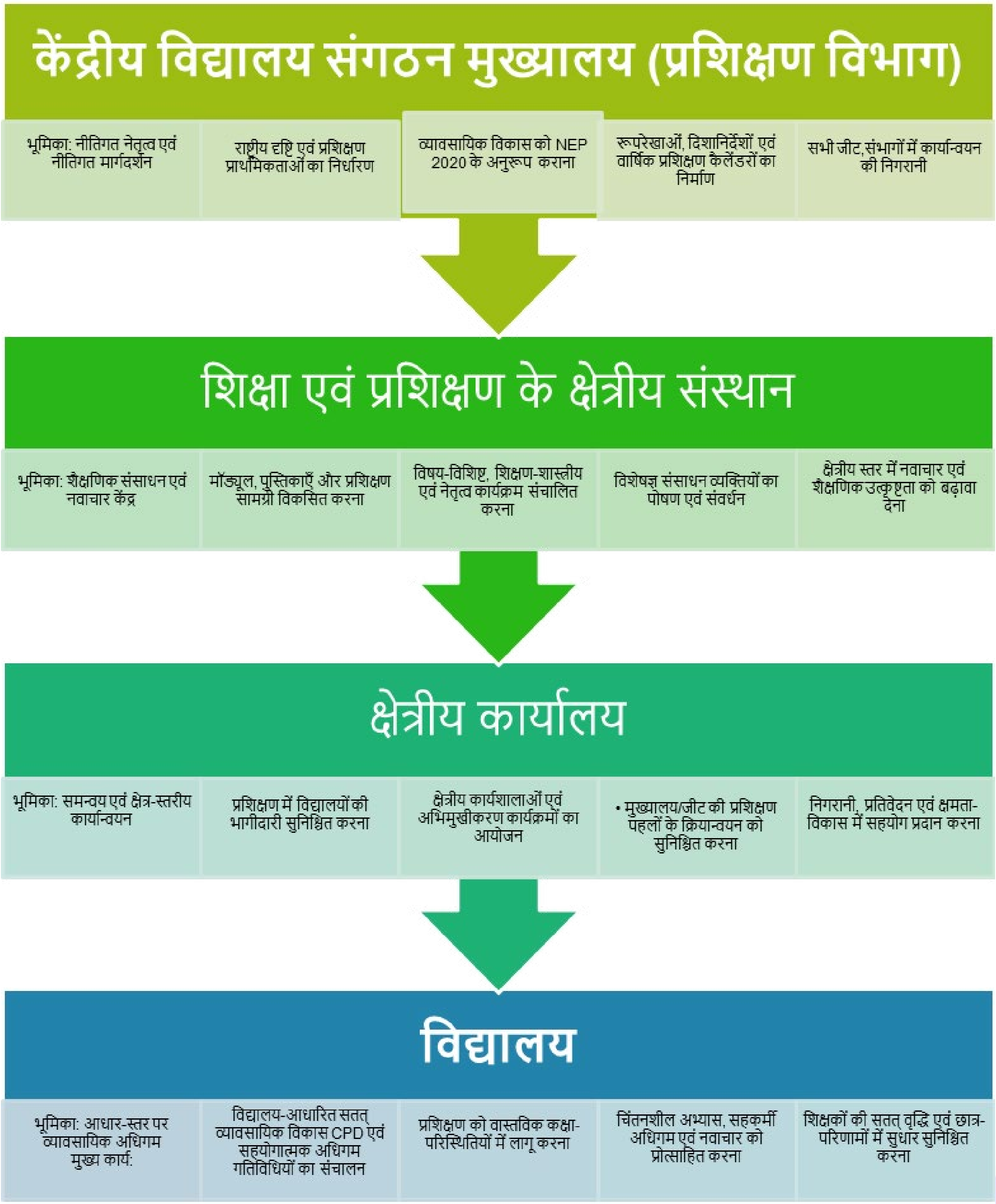

डिजिटल निगरानी: समागम पोर्टल: केंद्रीय विद्यालय संगठन अपने सभी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को इन-हाउस समागम पोर्टल के माध्यम से अनुगमन और निगरानी (ट्रैक और मॉनिटर) करता है, जो वास्तविक समय में रिपोर्टिंग, उपस्थिति अनुगमन (ट्रैकिंग) और प्रशिक्षण आँकड़ों (डेटा) का समेकन सुनिश्चित करता है।

ज़ीट : फीडर क्षेत्र, प्रमुख दक्षता क्षेत्र, 2025–26 के प्रमुख कार्यक्रम एवं विशिष्ट पहलें

ज़ीट	फीडर क्षेत्र	मुख्य दक्षता क्षेत्र	2025–26 के प्रमुख कार्यक्रम	विशिष्ट पहलें
भुवनेश्वर	भुवनेश्वर, गुवाहाटी, कोलकाता, रांची, सिलचर, तिनसुकिया	STEM, FLN, सुरक्षा एवं विधिक साक्षरता,आई.सी.टी ICT, ओलंपियाड तैयारी, विद्यार्थी सहायक सामग्री (SSM) विकास	STEM संवर्धन (भौतिकी/गणित/जीवविज्ञान), एफएलएन/FLN कार्यशालाएँ, POCSO/POSH/विद्यालय सुरक्षा, ओलंपियाड अभिज्ञान (IIT/NISER/IAPT), शिक्षकों एवं पुस्तकालयाध्यक्षों हेतु आई सी टी प्रशिक्षण	ओलंपियाड तत्परता श्रृंखला, पुस्तकालयाध्यक्षों हेतु डिजिटल प्रशिक्षण, समग्र विद्यालय सुरक्षा मॉड्यूल
चंडीगढ़	चंडीगढ़, देहरादून, दिल्ली, गुरुग्राम, जम्मू	नेतृत्व, मूल्यांकन सुधार, संगीत शिक्षा, पठन संस्कृति, विद्यार्थी सहायक सामग्री SSM विकास	प्राचार्य/उप–प्राचार्य/हेडमास्टर हेतु नेतृत्व पाठ्यक्रम, मूल्यांकन साक्षरता एवं प्रयोगशाला प्रथाएँ, स्कूल बैंड प्रशिक्षण, पठन–अनुकूल विद्यालय ढाँचा	21वीं सदी नेतृत्व कार्यक्रम, संगीत एवं बैंड प्रशिक्षण, जीवविज्ञान मूल्यांकन एवं प्रयोगशाला प्रथाएँ
ग्वालियर	आगरा, भोपाल, जबलपुर, लखनऊ, वाराणसी	वाणिज्य–अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान, गणित शिक्षण–शास्त्र, विधिक साक्षरता, विद्यार्थी सहायक सामग्री SSM विकास	लेखाशास्त्र, व्यवसाय अध्ययन एवं अर्थशास्त्र में विषय-संवर्धन; क्षमता-आधारित अधिगम कार्यशालाएँ; आनंददायक अधिगम; POSH/POCSO/बाल अधिकार	वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र संवर्धन श्रृंखला,सीबीएल CBL प्रयोगशाला सत्र, नेतृत्व मॉड्यूल
मुंबई	मुंबई, अहमदाबाद, जयपुर, पटना, रायपुर	ICT एवं डिजिटल शिक्षण–शास्त्र, ओलंपियाड तैयारी, अंतर्विषयी कला, मानसिक स्वास्थ्य, SSM विकास	भौतिकी/रसायन/गणित में विषय–संवर्धन;आई.सी.टी ICT/ई- ग्रंथालय e-Granthalaya प्रशिक्षण; समावेशी शिक्षा एवं सहायक प्रौद्योगिकी; अंतर्विषयी कला–विज्ञान	ओलंपियाड प्रशिक्षण श्रृंखला,आई.सी.टी ICT शिक्षण, ई-ग्रंथालय4.0 आधुनिकीकरण
मैसूरु	बेंगलुरु, चेन्नई, हैदराबाद, एर्नाकुलम	विद्यार्थी सहायक सामग्री(SSM)विकास, एफ.एल.एन.(FLN) , अनुभवात्मक अधिगम, मूल्यांकन डिज़ाइन	बहुविषयी विद्यार्थी सहायक सामग्री SSM विकास, नेतृत्व प्रशिक्षण, समावेशी शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, विषय–समृद्धि कार्यक्रम	विद्यार्थी सहायक सामग्री SSM विकास कार्यशालाएँ, प्राथमिक नेतृत्व में उत्कृष्टता, उन्नत शिक्षण पद्धति कार्यक्रम

विशेष फीचर : प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह

प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह : केंद्रीय विद्यालय संगठन की प्रशिक्षण यात्रा का स्वाभाविक एवं अपरिहार्य विस्तार

विगत वर्षों में लगातार केंद्रीय विद्यालय संगठन की प्रशिक्षण प्रणाली में क्रमिक विस्तार और परिपक्वता—सुव्यवस्थित सेवाकालीन प्रशिक्षण (इन-सर्विस) पाठ्यक्रमों से मॉड्यूल आधारित प्रारुपों तथा अंततः निरंतर व्यावसायिक विकास (CPD) ढाँचे तक—ने संगठन-स्तर पर एक सुव्यवस्थित एवं सामूहिक व्यावसायिक चिंतन मंच की आवश्यकता को स्पष्ट रुप से रेखांकित किया। प्रशिक्षण पद्धतियों के इस विकासक्रम ने यह स्थापित किया कि व्यावसायिक उन्नति अब केवल समय-समय पर आयोजित होने वाली एक स्वतंत्र गतिविधि न होकर, संगठन के दैनिक कार्य प्रणाली का अभिन्न एवं निरंतर भाग बन चुका है।

नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन के साथ—जो सतत् अधिगम, क्षमता-आधारित शिक्षा तथा शिक्षक स्वायत्तता पर विशेष बल देती है—केंद्रीय विद्यालय संगठन ने यह अनुभव किया कि उसकी विस्तृत प्रशिक्षण प्रणाली को एकीकृत, सुविचारित और शैक्षिक रुप से संगठित करने हेतु एक सम्मिलित मंच का निर्माण आवश्यक है।

इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह की संकल्पना की गई। यह पहल प्रकरणाधारित प्रशिक्षण से आगे बढ़कर एक ऐसी संस्कृति के उद्भव का संकेत देती है, जिसमें संपूर्ण संगठन सामूहिक व्यावसायिक उन्नति को अपना मुख्य उद्देश्य मानता है। केंद्रीय विद्यालय संगठन की प्रशिक्षण यात्रा जहाँ संरचनाओं, प्रक्रियाओं और प्रशिक्षण प्रारुपों के सुदृढ़ीकरण का इतिहास प्रस्तुत करती है, वहीं यह सप्ताह संगठन के भीतर एक व्यावसायिक दृष्टिकोण एवं नैतिकता के उद्भव का प्रतीक है।

यह सप्ताह, प्रत्येक वर्ष शिक्षकों, विद्यालय-प्रमुखों, ज़ीट (ज़ीट), क्षेत्रीय कार्यालयों तथा मुख्यालय को एक सुनहरा अवसर प्रदान करता है, जिसमें वे अपने प्रयासों के अनुरुप, प्राथमिकताओं के पुनर्मूल्यांकन तथा समकालीन शैक्षणिक अपेक्षाओं के साथ सारगर्भित संवाद स्थापित करने का मंच प्रदान करता है।

अतएव, प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह (टी एंड डी सप्ताह) , केंद्रीय विद्यालय संगठन की प्रशिक्षण यात्रा का एक स्वाभाविक, क्रमिक और अपरिहार्य विस्तार है—एक सुव्यवस्थित संगठन-स्तरीय कार्यक्रम, जो शिक्षकों एवं शैक्षणिक नेतृत्व को प्रगति की समीक्षा करने, अधिगम आवश्यकताओं की पहचान करने और राष्ट्रीय शिक्षा सुधारों तथा संगठनात्मक उद्देश्यों के अनुरुप स्वयं को पुनर्मूल्यांकन करने में सक्षम बनाता है। यह उस सिद्धांत का सजीव प्रतीक है कि सतत् व्यावसायिक विकास केवल नीतिगत अपेक्षा भर नहीं, अपितु एक निरंतर सीखने वाले संगठन के रुप में केंद्रीय विद्यालय संगठन की मूलभूत विशेषता है।

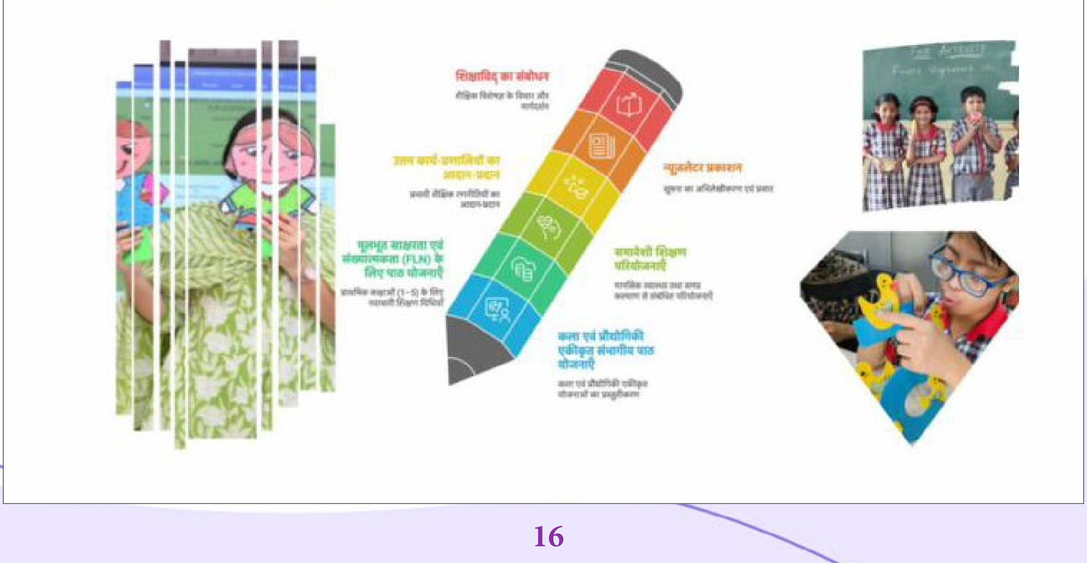

P1 — उद्देश्य

- **प्रशिक्षण एवं विकास (T&D) सप्ताह की आवश्यकता : -**
  - प्रशिक्षण एवं विकास (T&D) सप्ताह Training & Development Week का उद्देश्य के.वि.सं. में व्यावसायिक दक्षताओं को सुदृढ़ करना है।
    - इसके प्रमुख लक्ष्य हैं:
  - गहन शैक्षणिक (पैडागॉजिकल) विशेषज्ञता का विकास करना
  - शिक्षण एवं शैक्षणिक नेतृत्व को सुदृढ़ करना
  - कक्षाओं में आत्म-परक प्रभावात्मक (रिफ्लेक्टिव) अभ्यास को बढ़ावा देना
  - नवाचार तथा उत्कृष्ट प्रथाओं के आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करना
  - विद्यालयों एवं क्षेत्रों के बीच सहयोग को मजबूत करना
  - मूल रूप से उद्देश्य सरल है: सशक्त शिक्षक ही सशक्त शिक्षार्थी तैयार करते हैं।

P2 — प्राथमिकताएँ

- •प्रशिक्षण एवं विकास (T&D) सप्ताह किस प्रकार के. वि. सं. के नीतिगत लक्ष्यों के अनुरूप है:
- •प्रशिक्षण एवं विकास (T&D) सप्ताह, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति के.वि.सं. की प्रतिबद्धता को निम्न क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करके सुदृढ़ करता है:
- •दक्षता-आधारित शिक्षण एवं अधिगम
- •डिजिटल एकीकरण एवं प्रौद्योगिकी-सक्षम कक्षाएँ
- •समावेशी शिक्षा एवं सीखने में समानता
- •विद्यार्थियों का समग्र विकास
- •शिक्षक कल्याण एवं व्यावसायिक नैतिकता
- •विद्यालय उन्नयन हेतु नेतृत्व
- •ये प्राथमिकताएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के प्रमुख सुधारों तथा भविष्य-उन्मुख विद्यालयों के लिए के.वि.सं. की दृष्टि के अनुरूप हैं।

P3 — अभ्यास

- **सप्ताह के दौरान आयोजित गतिविधियों में होता है:**
- •यह सप्ताह क्रियात्मक (एक्शन-ओरिएंटेड) होता है और विविध प्रारूपों में व्यावसायिक अधिगम को प्रदर्शित करता है:
- **•कार्यशालाएँ, प्रदर्शन तथा मॉडल पाठ**
- **•वेबिनार एवं विशेषज्ञ संवाद**
- **•अंतर-क्षेत्रीय सहयोगात्मक सत्र**
- **•सहकर्मी-अधिगम मंच एवं आत्म-परक (रिफ्लेक्टिव) समूह**
- **•विद्यालय-आधारित सतत् व्यावसायिक विकास (CPD) पहलें**
- •ये अभ्यास प्रशिक्षण एवं विकास (T&D) सप्ताह को एक जीवंत, सम्पूर्णता आधारित अधिगम अनुभव प्रदान करते हैं।

P4 — दर्शन

- **प्रशिक्षण एवं विकास (T&D) सप्ताह की मूल भावना**
- प्रशिक्षण एवं विकास (T&D) सप्ताह के.वि.सं. की इस मान्यता को प्रतिरूपित करता है कि—
- **•व्यावसायिक विकास सतत् प्रक्रिया है।**
- **•अधिगम सहयोगात्मक होता है।**
- **•शिक्षक ही अनुदेशनकर्त्ता (Instructional Leaders) हैं।**
- **•आत्म-चिन्तन (Reflection) सुधार को प्रेरित करता है।**
- **•उत्कृष्टता हेतु नवाचार अनिवार्य है।**

प्रशिक्षण की विरासत जिसने टी एंड डी सप्ताह को आकार दिया

वर्षवार प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या में हुई वृद्धि उस सुदृढ़ व्यावसायिक विकास परंपरा को प्रतिबिंबित करती है, जिसने प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह की दृष्टि को आकार प्रदान किया। पिछले एक दशक में के.वि.सं. की प्रशिक्षण प्रणाली निरंतर विकसित शैक्षणिक आवश्यकताओं के अनुरूप व्यापक रूप से विस्तारित हुई है। वर्ष 2020–21 में दर्ज उल्लेखनीय वृद्धि कोविड-19 के दौरान बड़े पैमाने पर ऑनलाइन प्रशिक्षण में परिवर्तन का द्योतक है, जबकि 2024–25 में प्राप्त विशेष वृद्धि 50 घंटे की सीपीडी अनिवार्यता के क्रियान्वयन से संबंधित है, जिसने शिक्षकों को अनेक कार्यक्रमों में सहभागिता हेतु प्रोत्साहित किया। यह उर्ध्वगामी प्रवृत्ति केवल आँकड़ों में वृद्धि का संकेत नहीं देती—यह एक ऐसी सुदृढ़ होती अधिगम संस्कृति को दर्शाती है, जिसने टी एंड डी सप्ताह की नींव को सशक्त बनाया। यह सप्ताह निरंतर उन्नयन, चिंतन और सहयोग की भावना का समारोह है, जो के.वि.सं. की प्रशिक्षण यात्रा की समृद्ध विरासत पर आधारित है।

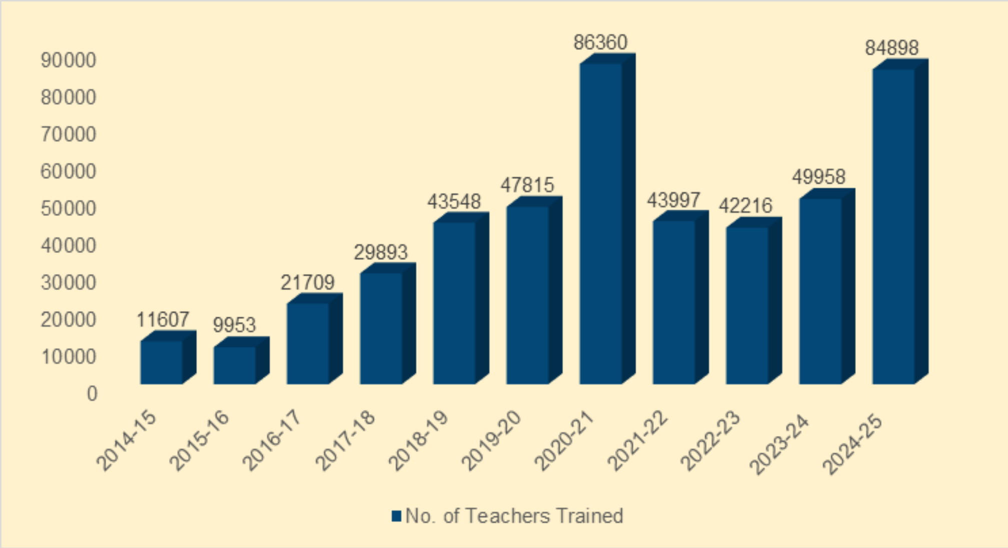

प्रशिक्षण और विकास सप्ताह की प्रतियोगिताओं के लिए चयनित विषय-वस्तु केन्द्रीय विद्यालय संगठन (KVS) के वार्षिक विषयगत प्रशिक्षण आँकड़ों से उभरती प्राथमिकताओं के अनुरूप निर्धारित की गई थी। एफएलएन (FLN) प्रशिक्षण में हुई तीव्र वृद्धि ने आधारभूत अधिगम को स्वाभाविक रूप से प्रमुख केंद्र बना दिया, जबकि स्टेम (STEM), दक्षता-आधारित अधिगम, डिजिटल प्रौद्योगिकी और मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में बढ़ती सहभागिता ने नवाचारी, प्रौद्योगिकी-सक्षम एवं शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षण पद्धतियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता को रेखांकित किया। अनुभवात्मक अधिगम को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से एनसीईआरटी की कला-समेकित पाठों एवं परियोजनाओं पर आधारित राष्ट्रीय प्रतियोगिता **'समृद्धि'** को भी T&D सप्ताह के एक प्रमुख घटक के रूप में सम्मिलित किया गया। नेतृत्व विकास एवं गैर-शिक्षण कार्मिकों के प्रशिक्षण में निरंतर सहभागिता ने विविध श्रेणियों को शामिल किए जाने का औचित्य और भी सुदृढ़ किया। समग्र रूप से ये प्रतियोगिताएँ वास्तविक प्रशिक्षण प्रवृत्तियों का प्रतिबिंब थीं और उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि व्यावसायिक विकास ने के.वि.सं. की कक्षाओं में किस प्रकार सकारात्मक परिवर्तन लाया है।

वर्षों से के.वि.सं. समाज की बदलती आवश्यकताओं के साथ निरंतर कदम से कदम मिलाकर चलता रहा है और अनेक अवसरों पर विद्यालयी शिक्षा में राष्ट्रीय प्रवृत्तियों से भी आगे रहा है। ऐसे समय में जब अनेक शिक्षण प्रणालियाँ अभी एनईपी 2020 के निहितार्थों को समझने का प्रयास कर रही थीं, के.वि.सं. ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता, दक्षता-आधारित अधिगम तथा आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान को सुदृढ़ करने जैसे उभरते क्षेत्रों में सक्रिय क्षमता निर्माण आरंभ कर दिया था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि के.वि.सं. ने एनईपी की भावना को आत्मसात करते हुए प्रत्येक स्तर पर उसके कार्यान्वयन में अग्रणी भूमिका निभाई, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रत्येक शिक्षक भविष्य के लिए सदैव तत्पर रहे। सुधारों की प्रतीक्षा करने के बजाय उन्हें पूर्वानुमानित करने की यह तत्परता के.वि.सं. की नवाचार, उत्कृष्टता और शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

विषयगत प्रशिक्षण		
विषय	**2023-24**	**2024-25**
बुनियादी साक्षरता संख्याज्ञान (FLN)	2463	12402
स्टेम STEM शिक्षा	157	2719
CBL – CBA (क्षमता-आधारित अधिगम एवं मूल्यांकन)	330	2846
मानसिक स्वास्थ्य	114	705
डिजिटल प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग	4415	3704
गैर-शिक्षण कर्मचारियों का प्रशिक्षण	4066	4502
नेतृत्व प्रशिक्षण	449	544

प्रशिक्षण एवं विकास:
प्रमुख आयोजन एवं गतिविधियाँ

प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह ने के.वि.सं. भर में चिंतन, नवाचार एवं सामूहिक व्यावसायिक विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विविध प्रकार की प्रेरणादायक अधिगम गतिविधियों को एक मंच पर संगठित किया। रचनात्मक प्रतियोगिताओं, पाठ–योजना निर्माण पहलों, शिक्षण–अधिगम की उभरती अवधारणाओं के अन्वेषण तथा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित वेबिनारों के माध्यम से शिक्षकों ने समकालीन शैक्षिक प्राथमिकताओं के साथ गहन सहभागिता स्थापित की। निम्नलिखित प्रमुख बिंदु उन विविध एवं समृद्ध व्यावसायिक अनुभवों को रेखांकित करते हैं, जिन्होंने इस वर्ष के प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह को विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया।

कला-एकीकृत (समृद्धि) प्रतियोगिताएँ

'समृद्धि' कला-समेकित प्रतियोगिताओं ने शिक्षकों को एक ऐसा रचनात्मक मंच प्रदान किया, जहाँ वे विभिन्न कलारूपों को शैक्षणिक विषय-वस्तुओं के साथ समेकित करते हुए शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं की पुनर्कल्पना कर सके। प्रतिभागियों ने ऐसी अधिगम अनुभूतियों का निर्माण किया, जिनमें दृश्य कला, संगीत, कथा–वाचन, नाट्य-तत्व तथा स्थानीय हस्तशिल्प को पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के साथ सुगठित रूप से जोड़ा गया।

इस पहल ने अंतर्विषयी चिंतन को प्रोत्साहित किया और कक्षाओं में अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा दिया। शिक्षकों ने नवाचारी पाठ–योजनाएँ प्रस्तुत कीं, जिनके माध्यम से अमूर्त अवधारणाएँ अधिक सुलभ, मूर्त एवं सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक बन सकीं। इन प्रतियोगिताओं ने यह भी रेखांकित किया कि रचनात्मकता विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता तथा अवधारणात्मक स्पष्टता को सुदृढ़ करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

समग्रतः, समृद्धि ने यह स्मरण दिलाया कि शिक्षा तभी सार्थक बनती है जब ज्ञान अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता और सांस्कृतिक संदर्भों से जुड़कर सीखने की जीवंत प्रक्रिया में परिवर्तित होता है।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान पाठ प्रस्तुति

कला-समेकित पाठ प्रस्तुति

नवाचारी पाठ प्रस्तुति

शिक्षा में कला कौशल: समृद्धि की उत्कृष्ट प्रस्तुतियों का उत्सव

जीट , भुवनेश्वर

सुश्री रमिता गांगुली, प्र.स्ना. शि अंग्रेज़ी एवं श्री सौमेंद्र सरकार, प्र.स्ना. शि. कला शिक्षा

जीट, चंडीगढ़

डॉ. सैय्यदा ऐमन हाशमी, स्ना. शि. अंग्रेज़ी एवं सुश्री सोनम सिंह, प्र.स्ना. शि. कला शिक्षा

जीट, ग्वालियर

श्री अश्विनी कुमार, स्ना . शि. अंग्रेज़ी एवं श्रीमती साधना सिंह, प्र.स्ना. शि. कला शिक्षा

जीट, मुंबई

सुश्री शीबा के.एम. , स्ना. शि. जीवविज्ञान एवं सुश्री मृदुला नागदा, प्रा.शि. संगीत

जीट, मैसूर

सुश्री दीप्ति प्रदीप तिवारी, प्र.स्ना. शि. गणित

आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान पाठ-योजना

आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान (FLN) पाठ-योजना पहल का उद्देश्य प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण हेतु शिक्षकों की क्षमताओं को सुदृढ़ करना था। शिक्षकों ने पठन प्रवाह, पठन-बोध, संख्या-बोध तथा समस्या-समाधान कौशल में सुधार लाने के लिए संरचित पाठ-डिज़ाइन विकसित किए। इस गतिविधि में आयु-उपयुक्त शिक्षण पद्धतियों, शिक्षार्थियों की विविधता तथा परिणाम-आधारित योजना-निर्माण पर विशेष बल दिया गया। शिक्षकों ने कहानी-कथन, ध्वन्यात्मक जागरूकता तकनीकों, अंत:क्रियात्मक गतिविधियों तथा निरंतर एवं निर्माणात्मक आकलन उपकरणों जैसी नवाचारी पद्धतियों का प्रयोग किया। इस पहल ने आधारभूत अधिगम के लिए राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप कार्य करने को प्रोत्साहित किया, साथ ही आत्ममंथन-आधारित शिक्षण पद्धतियों को भी बढ़ावा दिया। सहकर्मी सहभागिता एवं मूल्यांकन के माध्यम से शिक्षकों ने ऐसी प्रभावी FLN पाठ-योजनाएँ तैयार करने की व्यावहारिक समझ विकसित की, जो अधिगम-अंतरालों को सुव्यवस्थित एवं प्रभावकारी ढंग से अभिव्यक्त करती हैं।

आधारभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान पाठ-योजना प्रतियोगिता के विजेता

जीट, भुवनेश्वर	जीट, चंडीगढ़	जीट, ग्वालियर	जीट, मुंबई	जीट, मैसूरु
	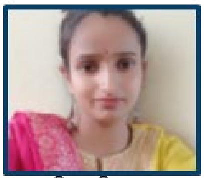	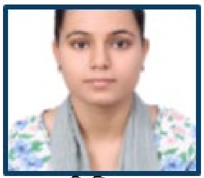		
सुश्री नम्रता मिश्रा, प्रा. शि.	सुश्री मनीषा, प्रा. शि.	सुश्री सिमरन जुनेजा, प्रा. शि.	सुश्री सरिता प्रा. शि.	सुश्री श्रीकला जी, प्रा. शि. सुश्री श्रद्धा शुक्ला, प्रा. शि. सुश्री स्वाति राय, प्रा. शि.

समावेशी पाठ-योजना

समावेशी पाठ-योजना गतिविधि का उद्देश्य शिक्षकों को ऐसे अधिगम परिवेश तैयार करने के लिए सशक्त बनाना था, जो विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को समाहित कर सकें। शिक्षकों ने ऐसी पाठ-योजनाओं की संकल्पना की, जो कक्षा में विद्यार्थियों की भिन्न-भिन्न क्षमताओं, सीखने की शैलियों तथा सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताओं को संबोधित करती हैं। इस गतिविधि में सार्वभौमिक अधिगम डिज़ाइन, विभेदित शिक्षण तथा सुगठित पद्धतियों पर विशेष बल दिया गया। प्रतिभागियों ने प्रदर्शित किया कि किस प्रकार लचीली शिक्षण विधियों और सहभागिता के अनेक माध्यमों के द्वारा पाठ्यचर्या के लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं। यह गतिविधि शिक्षकों को शिक्षा में समानता और सहानुभूति के महत्व के प्रति भी संवेदनशील बनाती है। समावेशी शिक्षण विधियों और कक्षा अभ्यासों से यह पहल ऐसी सोच को विकसित करती है, जो विविधता का सम्मान करती है और यह सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक शिक्षार्थी को सार्थक शैक्षिक अवसर प्राप्त हों।

समावेशी पाठ-योजना के विजेता

जीट भुवनेश्वर
सुश्री सोनाली डे, प्रा. शि.

जीट चंडीगढ़
श्री राजेश वशिष्ठ, प्र.स्ना.शि. अंग्रेज़ी

जीट ग्वालियर
सुश्री कोमल, प्रा. शि.

जीट मुंबई
सुश्री प्रियांका नयानी, प्रा. शि.

जीट मैसूरु
सुश्री स्मिता,एच. एम
श्री भुवनेश, प्रा. शि.
सुश्री प्रगति प्रजापति, प्रा. शि.
सुश्री वैशाली सोनी, प्र.स्ना.शि.

नवोन्मेषी शिक्षण पद्धतियाँ

नवोन्मेषी शिक्षण पद्धतियों पर आधारित सत्रों ने शिक्षकों को पारंपरिक तरीकों से हटकर आधुनिक शिक्षण पद्धतियों का अन्वेषण करने के लिए प्रोत्साहित किया। मुख्य केंद्रबिंदु में अनुभवात्मक शिक्षण, परियोजना-आधारित शिक्षण, खोज-प्रधान शिक्षण और मिश्रित शिक्षण मॉडल शामिल थे। शिक्षकों ने रचनात्मक कक्षा अभ्यास प्रस्तुत किए जिन्होंने छात्रों में आलोचनात्मक सोच, सहयोग और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा दिया। शिक्षण को विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक और भावनात्मक आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित करने पर जोर दिया गया, साथ ही जिज्ञासा और स्वतंत्र सीखने को बढ़ावा देने पर भी ध्यान केंद्रित किया गया। इन बातचीतों के माध्यम से शिक्षकों को व्यावहारिक विचारों का आदान-प्रदान करने का अवसर मिला, जो सीधे कक्षाओं में लागू किए जा सकते हैं। इस पहल ने प्रयोग और चिंतन की संस्कृति को प्रोत्साहित किया, यह विश्वास मजबूत किया कि शिक्षण में नवाचार भविष्य के तैयार शिक्षार्थियों के विकास के लिए आवश्यक है।

नवोन्मेषी पाठ योजना के विजेता

जीट भुवनेश्वर	जीट चंडीगढ़	जीट ग्वालियर	जीट मुंबई	जीट मैसूरु
श्री तरुण कुमार दास, प्रा.शि.	सुश्री भावना शर्मा, प्रा.शि.	श्री अंकित राजपूत, प्रा.शि. (संगीत)	सुश्री सोनाली राणा, प्रा.शि.	सुश्री सी. शेषा कुमारी, प्रा.शि. श्री नीरज यादव, प्रा.शि. सुश्री मधु, प्रा.शि.

वेबिनार

प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह के दौरान, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर के वेबिनारों की श्रृंखला ने शिक्षकों के पेशेवर दृष्टिकोण को समृद्ध किया। 9 अक्टूबर 2025 को आयोजित "जादुई पिटारा" वेबिनार ने शिक्षकों को गतिविधि-आधारित प्रारंभिक शिक्षण संसाधनों से परिचित कराया, जो कक्षाओं को आनंददायक और रुचिकर बनाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। 10 अक्टूबर 2025 को "ICT एकीकरण" सत्र ने शिक्षण, मूल्यांकन और विद्यार्थियों को डिजिटल उपकरणों के प्रभावी उपयोग पर प्रकाश डाला। 11 अक्टूबर 2025 को आयोजित "एक्शन रिसर्च" वेबिनार ने शिक्षकों को कक्षा की चुनौतियों की पहचान करने और अनुसंधान-आधारित हस्तक्षेपों के माध्यम से व्यवस्थित रूप से शिक्षण प्रथाओं में सुधार करने का मार्गदर्शन दिया। इन सत्रों ने मिलकर शिक्षण दक्षता और चिंतनशील शिक्षण को मजबूत किया।

जादुई पिटारा पर वेबिनार

शिक्षण में टेक्नो-पेडागॉजी एकीकरण पर वेबिनार

एक्शन रिसर्च पर वेबिनार

ज़ीट निदेशकों की अभिव्यक्तियाँ

सप्ताह भर, हमारे फ़ीडर क्षेत्रों के शिक्षकों ने समृद्धि के तहत कला और प्रौद्योगिकी-समेकित परियोजनाएँ, एफ.एल.एन. और नवोन्मेषी पाठ योजनाएँ, समावेशी शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित प्रस्तुतियाँ, विशिष्ट शिक्षाविदों के साथ संवाद और एन.सी.आर.टी वेबिनारों में भाग लिया। इन गतिविधियों का उद्देश्य शिक्षण विधियों को उन्नत करना, नवोन्मेषी तकनीकों को अपनाना और कक्षा सहभागिता को बढ़ाना था।

डॉ. अनुराग यादव
निदेशक
जीट, के.वि.सं., भुवनेश्वर

सप्ताह की एक विशेष झलक एन.सी.आर.टी. के समृद्धि कार्यक्रम के तहत कला-समेकित प्रस्तुतियाँ थीं, जिन्होंने रचनात्मकता और शिक्षण पद्धति का मिश्रण कर उत्सव को और समृद्ध बनाया। इन प्रस्तुतियों ने दिखाया कि कला कैसे भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सांस्कृतिक जागरूकता और अनुभवात्मक शिक्षण को बढ़ावा देने का शक्तिशाली माध्यम बन सकती है। शिक्षण में कलात्मक अभिव्यक्ति को शामिल करके, हमारे शिक्षक संपूर्ण दृष्टिकोण की क्षमता प्रस्तुत करते हैं जो बौद्धिकता और कल्पना दोनों का पोषण करता है।

श्रुति भार्गव
निदेशक
जीट, के.वि.सं., चंडीगढ़

इस प्रशिक्षण और विकास सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएँ, चर्चाएँ और प्रस्तुतियाँ उत्साह, सहभागिता और नवाचार का उत्कृष्ट मिश्रण प्रस्तुत करती हैं। प्रत्येक प्रतिभागी ने न केवल अपने विचार साझा किए बल्कि दूसरों के अनुभवों से सीखने की असाधारण क्षमता भी दिखाई। हमारे प्रशिक्षक और प्रतिभागी दोनों ही इस प्रशिक्षण और विकास सप्ताह के सच्चे नायक साबित हुए। उन्होंने यह दिखाया कि "सीखना एक यात्रा है, जो तभी पूरी होती है जब हम साथ-साथ आगे बढ़ें और दूसरों को भी साथ ले जाएँ।"

बी.एल. मारोडिया
निदेशक
जीट, के.वि.सं., ग्वालियर

इस कार्यक्रम ने शिक्षकों में नवाचार, सहयोग और समावेशिता की संस्कृति को सफलतापूर्वक सुदृढ़ किया। इसने केवल रचनात्मक उत्कृष्टता का समारोह नहीं मनाया, बल्कि प्रतिभागियों को चिंतनशील शिक्षकों और परिवर्तनकारी शिक्षण पद्धति के प्रवर्तकों के रूप में विकसित होते रहने के लिए प्रेरित किया। इन तीन दिनों के दौरान प्राप्त अनुभव और शिक्षाएँ निश्चय ही कक्षा-कक्ष शिक्षण को समृद्ध करने, छात्र सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने और केन्द्रीय विद्यालय संगठन में गुणवत्ता युक्त शिक्षा के साझा मिशन को आगे बढ़ाने में योगदान देंगी।

बी.के. बेहरा
निदेशक (अतिरिक्त प्रभार)
जीट, के.वि.सं., मुंबई

सप्ताह भर, बेंगलुरु, चेन्नई, एर्नाकुलम और हैदराबाद के शिक्षकों ने एक मंच पर साथ आकर अपने कार्यों को साझा किया। सहयोगात्मक और समावेशी शिक्षा, बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान, अनुभवात्मक शिक्षण, कला समेकित शिक्षण और सतत् अधिगम पद्धतियों, विविध शिक्षण क्षेत्रों में सर्वोत्तम तकनीकों का प्रशिक्षण प्राप्त किया । यह सप्ताह-भर का उत्सव केवल रचनात्मकता और नवाचार को प्रदर्शित नहीं करता, बल्कि इसका उद्देश्य हमारे साझा मिशन की पुष्टि भी करता है—हर बच्चे के लिए सीखने को समान, आनंददायक और अर्थपूर्ण बनाता है। `

मीनाक्षी जैन
निदेशक
जीट, के.वि.सं., मैसूरु

प्रशिक्षण एवं विकास सप्ताह: शिक्षकों की प्रतिपुष्टि

मुझे चेन्नई क्षेत्र के केन्द्रीय विद्यालय संगठन का प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जहाँ मैंने अपने विद्यालय की सर्वोत्तम प्रथाओं को प्रस्तुत किया। जीट स्तर पर साझा मंच पर प्रस्तुति देते हुए, मुझे फ़ीडर क्षेत्रों में लागू सर्वोत्तम प्रथाओं को भी देखने का अवसर मिला। इस अनुभव ने महत्वपूर्ण संवर्धन प्रदान किया, मेरी समझ को विस्तृत किया और विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावी प्रथाओं से सीखने में मदद की। इसने मुझे नए दृष्टिकोण दिए जिन्हें मैं अपने विद्यालय में अपनाकर लागू कर सकती हूँ।

– सुश्री अमुथा जे.
प्रधानाचार्या, पीएम श्री के.वि. नं. 2, मदुरै

मैं प्रशिक्षण और विकास सप्ताह 2025 में प्रतिभागी होकर प्रसन्न हूँ। 07/10/2025 को "नवोन्मेषी शिक्षण प्रथाएँ" सत्र में मेरा विषय "जॉली फॉनिक्स" था। सत्र ने नए युग की कक्षा रणनीतियाँ प्रस्तुत कीं, जो सीखने को अर्थपूर्ण, आनंददायक और छात्र-केंद्रित बनाती हैं। प्रतियोगिता ने कम लागत वाले TLMs और वास्तविक जीवन के उदाहरणों के उपयोग पर जोर दिया, साथ ही सहकर्मियों द्वारा सीखने और चिंतनशील शिक्षण के माध्यम से कक्षा सहभागिता को बढ़ाने के उपाय भी प्राप्त हुए।

भावना शर्मा
प्राथमिक शिक्षिका
के.वि. सांबा, जम्मू संभाग

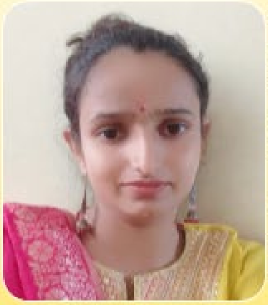

मैं प्रशिक्षण और विकास सप्ताह 2025 2025 में प्रतिभागी होकर प्रसन्न हूँ, विशेष रूप से 07/10/2025 को आयोजित "बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान" सत्र ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप प्रारंभिक शिक्षार्थियों में मूलभूत कौशल मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया और क्षमता-आधारित मूल्यांकन, व्यावहारिक उपकरण, कक्षा प्रबंधन विचार एवं आकर्षक तकनीकें साझा कीं, जिन्हें तुरंत कक्षाओं में लागू किया जा सकता है।

मनीषा

प्राथमिक शिक्षिका
पीएम श्री के.वि खटीमा, देहरादून , संभाग

मैंने संगीत शिक्षक सुश्री मृदुला नागदा के साथ मिलकर "Learn Biology with Art, Technology, Music and Dance" नामक कला-समेकित शिक्षण परियोजना प्रस्तुत की। हमने विषय "Ecosystem" चुना और इस थीम से संबंधित गीत और नृत्य तैयार किए। इस प्रतियोगिता ने मुझे समय प्रबंधन, आत्मविश्वास और सार्वजनिक बोलने के कौशल में मूल्यवान अनुभव प्रदान किया। साथ ही, समान विचारधारा वाले व्यक्तियों के साथ संवाद करने और उनके अनुभवों से सीखने का अवसर भी मिला।

शीबा के.एम.

पी.जी.टी. जीवविज्ञान
पीएम श्री के.वि. 2, , गोवा

प्रशिक्षण विभाग के अन्य आयाम

केंद्रीय विद्यालय संगठन : प्रशिक्षण में विश्लेषण की आवश्यकता

ज़ीट, मुंबई

सार्वभौमिक उद्देश्य :के.वि..सं. में व्यावसायिक विकास को सुदृढ़ बनाना
प्रशिक्षण में विशलेषण (टीएनए) सुनिश्चित करता है कि प्रशिक्षण लक्षित दिशा में हो, कार्यक्रम उच्च गुणवत्ता वाले हों, और शिक्षक सशक्त बनें—जिससे संपूर्ण के.वि.सं. प्रणाली में एक मजबूत शिक्षण संस्कृति विकसित हो सके।

Organisation	Training Programme	Teacher

प्रशिक्षण में विशलेषण (टीएनए) यह सुनिश्चित करता है कि के.वि.सं. में प्रत्येक प्रशिक्षण पहल सार्थक, समरुप और प्रभाव-केंद्रित हो। यह वास्तविक आवश्यकताओं की पहचान करने, केंद्रित कार्यक्रमों को डिज़ाइन करने तथा मुख्यालय, जीट, क्षेत्रीय कार्यालयों और विद्यालयों के स्तर पर संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करने में सहायक होता है।
न अनुमान, न पुनरावृत्ति, न अप्रासंगिक प्रशिक्षण।

संगठन/Organisation	प्रशिक्षण कार्यक्रम	**शिक्षक**
प्रशिक्षण को के.वि.सं. के लक्ष्यों एवं सुधारों के साथ संरेखित करता है **• भविष्य के लिए तैयार कार्यबल का निर्माण करता है** **• समस्त क्षेत्रों में एकरूप मानकों को सुनिश्चित करता है** **• एनईपी 2020 और डिजिटल परिवर्तन का समर्थन करता है** **• समय, प्रयास और संसाधनों के कुशल उपयोग को सक्षम बनाता है**	**प्रासंगिक, केंद्रित और शिक्षार्थी-केंद्रित बनता है** **• यह निर्धारित करने में सहायता करता है कि कौन-सी विधि सर्वाधिक उपयुक्त है (कार्यशाला, ऑनलाइन, अनुभवात्मक)** **• उच्च-गुणवत्ता वाली सामग्री और प्रस्तुति सुनिश्चित करता है।** **• प्रशिक्षण परिणामों में मापनीय सुधार की ओर ले जाता है।** **• कार्यक्रम डिज़ाइन के सतत् उन्नयन को समर्थ बनाता है।**	** वास्तविक व्यावसायिक आवश्यकताओं को संबोधित करता है।** ** कौशल, आत्मविश्वास एवं कार्य-तत्परता को सुदृढ़ बनाता है।** ** नई तकनीकों एवं शिक्षण-पद्धतियों के अनुरूप ढलने में सहायता करता है।** ** चिंतनशील अभ्यास तथा विकासोन्मुख मानसिकता को प्रोत्साहित करता है।** ** कक्षा-शिक्षण की गुणवत्ता एवं विद्यार्थी अधिगम में सुधार लाता है।**

प्रशिक्षण में विशलेषण **कैसे कार्य करता है? (प्रक्रिया का संक्षिप्त अवलोकन)**
संगठनात्मक विश्लेषण पद/कार्य विश्लेषण कौशल-अंतर की पहचान प्राथमिकता निर्धारण प्रशिक्षण योजना का निर्माण मूल्यांकन एवं प्रतिपुष्टि

प्रशिक्षण में विशलेषण (टी.एन.ए) 2025–26 : एक दृष्टिकोण

• 12 मार्च 2025 : जीट मुंबई ने टीएनए रिपोर्ट, के.वि.सं. मुख्यालय को प्रेषित की।	• आँकड़े संकलन हेतु इसे जीट क्षेत्रीय कार्यालयों विद्यालयों के साथ साझा किया गया।	• 20 मार्च 2025 : पाँच जीटों से प्राप्त अभिमतों का विश्लेषण किया गया प्रशिक्षण कैलेंडरों का पुनरीक्षण एवं अंतिम रुप प्रदान किया गया।

प्रशिक्षण में विशलेषण (टीएनए) लक्षित प्रशिक्षण, उच्च-गुणवत्ता वाले कार्यक्रम और सशक्त शिक्षकों के प्रशिक्षण को सुनिश्चित करता है—जिससे संपूर्ण के.वि.सं. प्रणाली में सुदृढ़ शिक्षण संस्कृति विकसित होती है।

के.वि.सं. में अल्पावधि कोर्स

ज़ीट, भुवनेश्वर

उद्देश्य

- अल्पावधि पाठ्यक्रम केंद्रित, दक्ष एवं आवश्यकता-आधारित प्रशिक्षण प्रदान करके शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को सुदृढ़ बनाते हैं। ये सभी संवर्गों का समर्थन करते हैं तथा इन्हें आंतरिक रूप से या बाहरी साझेदारों के सहयोग से संचालित किया जा सकता है।

इनकी आवश्यकता क्यों है

- NEP 2020 के सुधारों द्वारा प्रेरित :
- अनुभवात्मक अधिगम
- नवाचारी शिक्षण-पद्धतियाँ
- दक्षता-आधारित शिक्षा
- समावेशी शिक्षा
- उभरती हुई तकनीकें

ये पाठ्यक्रम क्या प्रदान करते हैं?

- नवीन क्षेत्रों में अधिगम के अवसर
- अद्यतन पाठ्यचर्या संबंधी ज्ञान
- नई रणनीतियों एवं प्रौद्योगिकियों के प्रति जागरूकता
- पाठ्यचर्या की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समर्थन

जीट इनका नियोजन कैसे करते है?

- जीट प्रत्येक वर्ष संभागीय आधार पर प्रशिक्षण आवश्यकताओं का संकलन एवं विश्लेषण करते हैं तथा जिनमें निम्नलिखित घटक शामिल होते हैं, ऐसे प्रशिक्षण कैलेंडर तैयार करते हैं :
- प्रवेश (Induction) प्रशिक्षण
- निरंतर कौशल-वर्धन
- पुनःप्रशिक्षण (Retraining)
- ICT एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का एकीकरण

पाठ्यक्रम की रूपरेखा कैसे तैयार की जाती है?

- सहभागी रणनीतियाँ
- इंटरऐक्टिव सत्र
- व्यावहारिक गतिविधियाँ एवं प्रदर्शन
- प्रौद्योगिकी का एकीकरण
- ई-मैन्युअल एवं प्रशिक्षण-पश्चात सहायता
- परिणाम : सक्रिय सहभागिता तथा कक्षा-शिक्षण व्यवहार में सुधार।

समग्र प्रभाव

- अल्पावधि पाठ्यक्रम चिंतन, सहयोग, आत्मविश्वास तथा 21वीं सदी की तैयारी को सुदृढ़ करते हैं—जिससे शिक्षण की गुणवत्ता और विद्यार्थी अधिगम-परिणामों में उल्लेखनीय सुधार होता है।

अल्प अवधि के पाठ्यक्रम के.वि.सं. के शिक्षकों को अद्यतन, दक्ष और बदलती शैक्षिक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनाए रखते हैं। ये कक्षा-शिक्षण की गुणवत्ता को मजबूत करते हैं और निरंतर व्यावसायिक विकास की संस्कृति को प्रोत्साहित करते हैं।

विद्यार्थी सहायक सामग्री
(Student Support Material)

ज़ीट मैसूरु

विद्यार्थी सहायक सामग्री (SSM) शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को समृद्ध बनाती है, क्योंकि यह प्रत्येक स्तर के शिक्षार्थियों के लिए स्पष्ट, सुव्यवस्थित और सरलीकृत विषय-वस्तु प्रदान करती है। प्रमुख अवधारणाओं को सरलतापूर्वक समझाने के उद्देश्य से तैयार की गई **विद्यार्थी सहायक सामग्री** SSM संक्षिप्त व्याख्याओं, आवश्यक परिभाषाओं, आरेखों, हल किए हुए उदाहरणों तथा केंद्रित अभ्यास के माध्यम से कक्षा शिक्षण को सशक्त बनाती है। इसकी संक्षिप्तता जानबूझकर रखी गई है—कमज़ोर शिक्षार्थियों को अतिभार से बचाने के लिए, और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को त्वरित एवं प्रभावी पुनरावृत्ति साधन उपलब्ध कराने के लिए। इस प्रकार **विद्यार्थी सहायक सामग्री** कक्षा में विविध अधिगम आवश्यकताओं को पूरा करते हुए एक पुल और प्रेरक दोनों की भूमिका निभाती है। **शैक्षणिक सत्र 2025–26 के लिए, कक्षा IX से XII तक की विद्यार्थी सहायक सामग्री तैयार करने की ज़िम्मेदारी ज़ीट को सौंपी गई**, जैसा कि परामर्श समिति की बैठक 21–22 फरवरी 2025 में निर्णय लिया गया था। विषय-वार उत्तरदायित्व पाँचों ज़ीट के बीच विभाजित किए गए, ताकि विशेषज्ञता, गुणवत्ता और एकरूपता सुनिश्चित की जा सके।

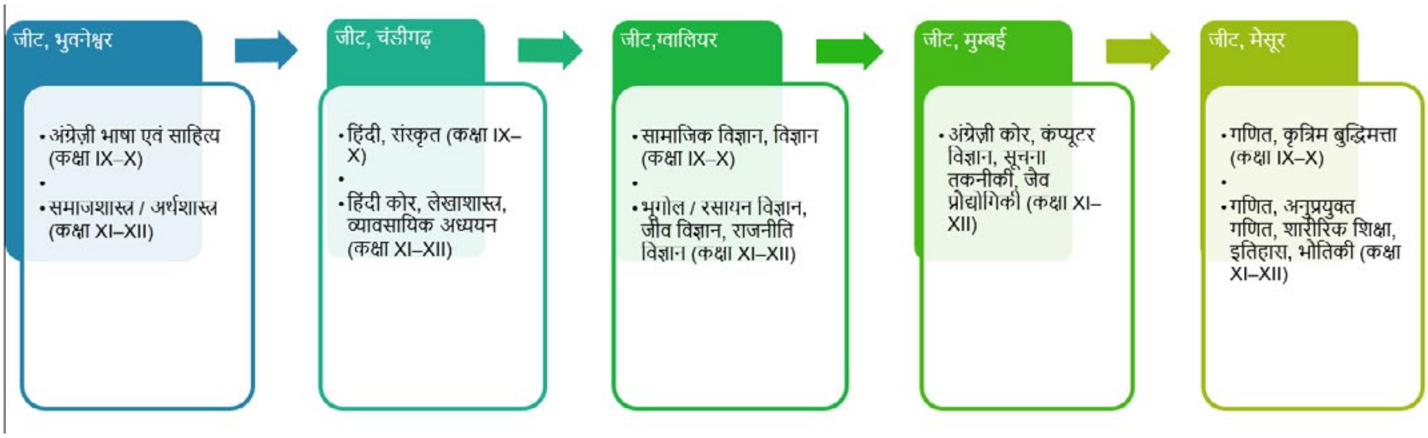

सभी विद्यार्थी सहायक सामग्री, के.मा.शि.बोर्ड के दिशा-निर्देशों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 का पालन करती हैं, जिससे उनकी प्रासंगिकता, सुगम्यता एवं उच्च शैक्षणिक गुणवत्ता सुनिश्चित होती है। प्रत्येक विद्यार्थी तक आवश्यक अधिगम को पहुँचाकर **विद्यार्थी सहायक सामग्री,** उनकी समझ, आत्मविश्वास तथा समग्र उपलब्धियों को सुदृढ़ बनाती है।

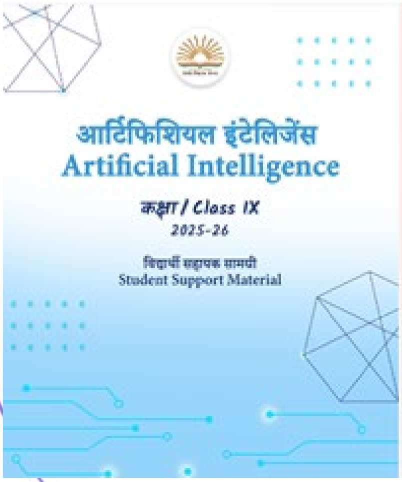

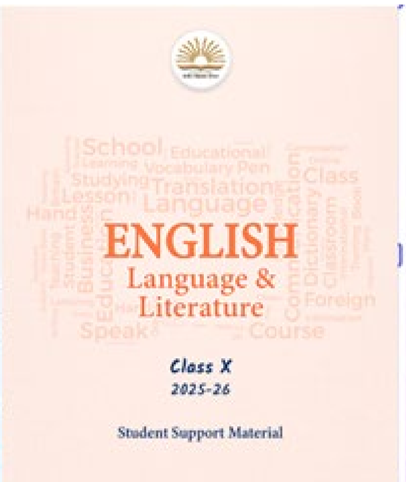

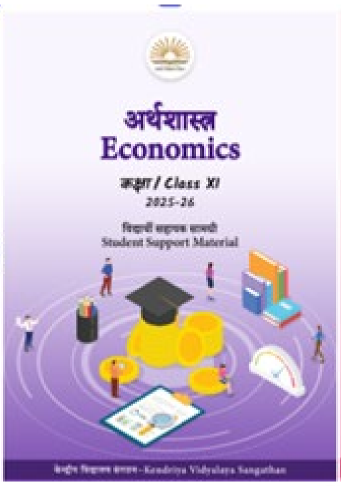

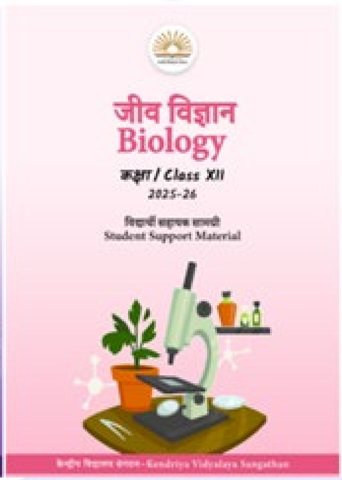

के.वि.सं. में शोध द्वारा रूपांतरण: अतीत से वर्तमान की यात्रा

ज़ीट चंडीगढ़

पूर्व : पारंपरिक कक्षा-शिक्षण की चुनौतियाँ	परिवर्तन पश्चात् :ज़ीट-प्रेरित शोध द्वारा रूपांतरित कक्षाएँ
1. **सीमित नवाचार** – शिक्षण निश्चित तरीकों पर निर्भर था, जिससे रचनात्मक समाधान बाधित होते थे।	1. **नवाचार नियमित अभ्यास बन गया है** – शिक्षक अनुभवात्मक, अन्वेषण-आधारित, सहयोगात्मक और दक्षता-आधारित शिक्षण विधियों का परीक्षण और परिष्करण कर रहे हैं।
2. **शिक्षार्थी आवश्यकताओं का अपर्याप्त विश्लेषण** – सीखने की कमियों और व्यवहारों का व्यवस्थित अध्ययन नहीं होता था।	2. **शिक्षार्थियों की गहन समझ विकसित** – एक्शन रिसर्च से सीखने की कमियों की पहचान, व्यवहार अध्ययन, हस्तक्षेप डिज़ाइन और प्रभाव का मूल्यांकन संभव हुआ है।
3. **अंक-प्रधान मूल्यांकन** – संक्षिप्त मूल्यांकन मुख्य था; निदानात्मक व स्वरुपक उपकरण सीमित थे।	3. **सीखने हेतु मूल्यांकन** – रुपरेखाएँ, सहकर्मी मूल्यांकन और लर्निंग-आउटकम ट्रैकर्स स्वरुपक और निदानात्मक प्रतिपुष्टि को मजबूत करते हैं।
4. **तकनीक का कम उपयोग** – डिजिटल साधन सहायक मात्र थे, शिक्षण में समाहित नहीं थे।	4. **उद्देश्यपूर्ण डिजिटल एकीकरण** – एआई उपकरण, सिम्युलेशन, मिश्रित रणनीतियाँ और मल्टीमीडिया संसाधन सोच-समझकर परखे और एकीकृत किए जा रहे हैं।
5. **एकरूप शिक्षण** – विविध क्षमताओं और सीखने की शैलियों को समान रणनीतियों से पर्याप्त समर्थन नहीं मिल पाता था।	5. **सत्य रूप में समावेशी शिक्षण** – विभेदित शिक्षण, सामाजिक-भावनात्मक समर्थन और समावेशी रणनीतियाँ सहभागिता और आत्मीयता को बढ़ाती हैं।
6. **अल्प सहयोग** – विचारों का साझा अनौपचारिक था; प्रभावी प्रथाओं का प्रलेखन नहीं होता था।	6. **सहयोगात्मक व्यावसायिक संस्कृति** – कार्यशालाएँ, सहकर्मी समीक्षा और अनुसंधान साझा करने से पूरे तंत्र में सीखने वाला समुदाय विकसित हो रहा है।
7. **साक्ष्य-बिना निर्णय** – विद्यालयी प्रक्रियाएँ डेटा और शोध के बजाय आदतों पर आधारित थीं।	7. **साक्ष्य-आधारित निर्णय** – रणनीतियाँ, प्रशिक्षण मॉड्यूल और विद्यालयी प्रक्रियाएँ अब कक्षा-आधारित डेटा और शोध-आधारित अंतर्दृष्टियों पर आधारित हैं।

शिक्षक-सहायक सामग्री तथा प्रशिक्षण पुस्तिकाओं/मॉड्यूल का निर्माण

ज़ीट, ग्वालियर

शिक्षकों को उच्च-गुणवत्ता वाला शैक्षणिक सहायता प्राप्त हो, इसे सुनिश्चित करने के लिए के.वि.सं. एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया का पालन करता है, जो नीति-निर्धारण से शुरु होकर विशेषज्ञ अंतर्दृष्टियों पर आधारित होती है, सुव्यवस्थित, सुदृढ़ प्रशिक्षण सामग्री विकसित करती है और उन्हें देशभर के कक्षाओं में प्रभावी रूप से एकीकृत कर लागू करती है।

- राष्ट्रीय मानकों और एकरूपता को बनाए रखने के लिए एनईपी 2020, एनसीएफ, सीबीएसई और एनसीईआरटी दिशानिर्देशों के अनुरूप।
- ज़ीट निदेशक, विषय-विशेषज्ञ, प्राचार्य, उप-प्राचार्य तथा अनुभवी शिक्षक संरचित कार्यशालाओं के माध्यम से सहयोग करते हैं।
- उद्देश्यों, कार्य-प्रणाली, संसाधन मानचित्रण, सत्र योजना, गतिविधियों तथा पठन-सामग्री सहित रिपोर्ट-कम-रेफ़रेंस मैनुअल का निर्माण।
- शिक्षक-सहायक सामग्री और मैनुअल दैनिक शिक्षण-सहायक साधन बन जाते हैं, जिससे के.वि.सं. में शिक्षण-पद्धति, सतत व्यावसायिक विकास (CPD) और कक्षा-प्रयोग को सुदृढ़ता मिलती है।

प्रशिक्षण पुस्तिकाएँ / मॉड्यूल

- व्यावसायिक विकास हेतु सुसंगठित संसाधन, जिनमें शामिल हैं:
- सुरक्षा पुस्तिकाएँ (Safety Manuals)
- सुरक्षित विद्यालय प्रोटोकॉल
- सकारात्मक कक्षा-प्रबंधन दिशानिर्देश
- 2. अभिविन्यास पुस्तिकाएँ (Induction Manuals)
- नए शिक्षकों के लिए के.वि.सं के नियम, प्रणालियाँ एवं मूलभूत शैक्षणिक दृष्टिकोण
- 3. पुनश्चर्या मॉड्यूल (Refresher Modules)
- विषयगत उन्नत अवधारणाएँ
- भाषा शिक्षण (Language Teaching – LT)
- समावेशन रणनीतियाँ (CWSN हेतु)

शिक्षक-सहायक सामग्री (कक्षा-सहायक साधन)

- व्यावहारिक और उपयोग हेतु तैयार संसाधन, जो प्रभावी कक्षा-शिक्षण में सहायक हैं:
- 1. श्रेणीबद्ध कार्यपत्रक (कक्षा X एवं XII)
- अभ्यास प्रश्न
- दक्षता-आधारित सामग्री
- सुझावित समाधान
- 2. गतिविधि-पुस्तकें (Activity Books)
- अनुभवात्मक अधिगम गतिविधियाँ
- कला एवं खेल समन्वित कार्य
- 3. दक्षता-आधारित सामग्री (Competency-Based Materials)
- सी.बी.ई. CBE रूपरेखाओं के अनुरूप कक्षा-अभ्यास सामग्री
- ये सभी संसाधन शिक्षकों को पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को स्पष्ट, रोचक और शिक्षार्थी-केंद्रित कक्षा-अभ्यासों में रूपांतरित करने में सक्षम बनाते हैं।

इस सुव्यवस्थित एवं सहयोगात्मक प्रक्रिया के माध्यम से केन्द्रीय विद्यालय संगठन, यह सुनिश्चित करता है कि देशभर के शिक्षक अद्यतन एवं उच्च-गुणवत्ता वाले शैक्षणिक संसाधन प्राप्त करें—जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में केंद्रीय विद्यालय संगठन की राष्ट्रीय अग्रणी संस्था की भूमिका और सुदृढ़ बनी रहे।

उत्कृष्टता का संकलन, नवाचार का प्रस्तुतीकरण: के.वि. सं. प्रशिक्षण विभाग के प्रकाशन

व्यावसायिक विकास और शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के अंतर्गत, के.वि.सं. प्रशिक्षण विभाग प्रभावकारी नीतियों का प्रलेखन करता है और उच्च-गुणवत्ता वाले शैक्षणिक संसाधनों का प्रकाशन करता है। ये प्रकाशन कक्षा-स्तरीय नवाचारों, शोध-आधारित अंतर्दृष्टियों तथा आदर्श शिक्षण-प्रशिक्षण मॉडलों को अभिलेखित करते हैं और देशभर के शिक्षकों तथा विद्यालय-प्रप्रमुखों के लिए महत्वपूर्ण संदर्भ-सामग्री के रूप में कार्य करते हैं।

मुख्य प्रकाशन

1. उद्देश्यपूर्ण शिक्षण प्रविधियाँ (PPP) श्रृंखला
यह श्रृंखला के.वि.सं. कक्षाओं में लागू उत्कृष्ट शिक्षण-विधियों का संकलन प्रस्तुत करती है।
किसलय – खंड II: उत्कृष्ट FLN पद्धति
फोकस ऑन CwSN – खंड III: समावेशी कक्षा-शिक्षण रणनीतियाँ
पुस्तकायन – खंड IV: सृजनात्मक पुस्तकालय गतिविधियाँ

2. नवोन्मेष — प्रशिक्षण अनुभाग का जर्नल
नवोन्मेषी शिक्षण-पद्धतियों, एक्शन रिसर्च, तथा शिक्षक-नेतृत्व पहलों का प्रलेखन प्रस्तुत करने वाला मंच।

3. आधारभूत अधिगम संसाधन
प्रारंभिक साक्षरता के व्यवस्थित शिक्षण को सहयोग प्रदान करने वाली संरचित फ़ोनिक्स वर्कबुकें।
फ़ोनिक्स वर्कबुक खंड I (कक्षा 1)
फ़ोनिक्स वर्कबुक खंड II (कक्षा 2)

4. प्रशिक्षण मॉड्यूल एवं मैनुअल
के.वि.सं. में क्षमता-विकास हेतु विकसित मानकीकृत प्रशिक्षण-सामग्री।
आधारभूत स्तर पर भाषा एवं साक्षरता क्षमताओं का विकास
2024 में नव-नियुक्त शिक्षकों के लिए इंडक्शन कोर्स

ये प्रकाशन मिलकर:

कक्षा अभ्यास को सुदृढ़ बनाते हैं • चिंतनशील, शोध-आधारित शिक्षण का समर्थन करते हैं • संरचित शैक्षणिक संसाधन प्रदान करते हैं

• शैक्षिक सुधार में के.वि.सं. के नेतृत्व को उजागर करते हैं • भविष्य में विस्तार के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं को संरक्षित करते हैं।

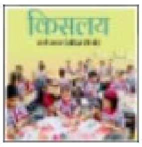

Kislay: Purposive Pedagogical Practices- Vol II (Best FLN Practices)

Navonmesh: a Journal by KVS Training Section

Focus on CwSN: Purposive Pedagogical Practices- Vol III

Workbook on Phonics- Vol I: For Class I

Workbook on Phonics- Vol II: For Class II

Developing Capacities in Language & Literacy at Foundational Stage (Training Module)

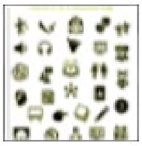

Induction Courses 2024

Pustakayan: Library Activities in KVS: PPP- Vol IV

प्रशिक्षण प्रभाग: प्रदर्शनी

के.वि.सं. प्रशिक्षण प्रभाग की निरंतर प्रगति में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि क्षमता निर्माण पहलों का व्यापक प्रदर्शन है, जिसे सुनियोजित ढंग से तैयार की गई प्रदर्शनी के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। इस प्रदर्शनी में प्रशिक्षण संसाधनों, शिक्षण संबंधी नवाचारों और व्यावसायिक विकास के परिणामों के प्रमाणों की एक विस्तृत श्रृंखला को एक साथ लाया जाता है, जो शिक्षकों की दक्षताओं को मजबूत करने के लिए किए गए प्रयासों की गहराई और विविधता को दर्शाती है। निरंतर प्रगति का स्पष्ट और सुसंगत दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के उद्देश्य से तैयार की गई इस प्रदर्शनी ने व्यापक ध्यान आकर्षण करती है क्योंकि इसमें प्रभावी ढंग से दिखाया जाता है कि सतत प्रशिक्षण पहल किस प्रकार कक्षाओं में सार्थक परिवर्तन लाती हैं।

के.वि.सं. स्थापना दिवस प्रदर्शनी 2024 में प्रशिक्षण विभाग की उपस्थिति ने व्यापक ध्यान आकर्षित किया। सुविचारित ढंग से तैयार किए गए स्टॉल ने के.वि.सं. के व्यावसायिक विकास प्रयासों की गहराई और विविधता को बखूबी दर्शाया। साक्ष्य-आधारित प्रशिक्षण परिणामों, विषयगत पहलों, सर्वोत्तम शिक्षण पद्धतियों और क्षमता निर्माण उपलब्धियों को प्रदर्शित करने वाले बहु-पैनल प्रदर्शन ने आगंतुकों को यह समझने का व्यापक अवसर प्रदान किया कि प्रशिक्षण किस प्रकार कक्षा में परिवर्तन लाता है। शिक्षण-अधिगम संसाधनों, गतिविधि किटों और प्रशिक्षण मॉड्यूल की आकर्षक प्रदर्शनियों के साथ-साथ, स्टॉल ने के.वि.सं. के ज्ञान साझेदारों के महत्वपूर्ण योगदान को भी उजागर किया, और प्रणाली भर में नवाचार, डिजिटल एकीकरण और शिक्षण उत्कृष्टता को मजबूत करने में उनकी भूमिका को स्वीकार किया। स्टॉल को इसकी स्पष्टता, रचनात्मकता और समृद्ध दस्तावेज़ीकरण के लिए सराहना मिली, जिसने के.वि.सं. की शिक्षक प्रशिक्षण की विरासत और सतत व्यावसायिक विकास के लिए इसके दूरदर्शी दृष्टिकोण को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित किया।

केंद्रीय विद्यालय संगठन, स्थापना दिवस, प्रदर्शनी 2024 में प्रशिक्षण विभाग की मुख्य उपलब्धियाँ और पहलें

आभार

प्रशिक्षण विभाग, श्री विकास गुप्ता, (आई.ए.एस.) आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय संग़ठन; सुश्री चंदना मंडल, अपर आयुक्त (शैक्षणिक); तथा श्री नगेन्द्र गोयल, संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण) के मार्गदर्शन एवं समर्थन के प्रति कृतज्ञतापूर्वक आभार व्यक्त करता है, जिनके नेतृत्व ने इस स्मारिका के निर्माण को प्रेरित किया।विशेष आभार डॉ. ऋतु पल्लवी, सहायक आयुक्त, को जिनके द्वारा इस प्रकाशन की संकल्पना प्रस्तुत की गई; तथा सुश्री रत्ना पाठक, सहायक शिक्षा अधिकारी, को जिनके समन्वयन, परिकल्पना और उत्कृष्ट रूपांकन से यह स्मारिका साकार हुई।हम डॉ. सैयदा ऐमन हाशमी, सुश्री झंझा चक्रवर्ती, एवं श्री बसंत कुमार के प्रति भी हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करते हैं, जिन्होंने लेखन, संपादन तथा प्रूफरीडिंग में मूल्यवान योगदान प्रदान किया। यह संयुक्त प्रयास के.वि.सं. में प्रशिक्षण विभाग के कार्यों को दिशा देने वाली सामूहिक निष्ठा और प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

श्री विकास गुप्ता, (आई.ए.एस), आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन

सुश्री चंदना मंडल, अतिरिक्त आयुक्त (शैक्षणिक) केंद्रीय विद्यालय संगठन

श्री नगेन्द्र गोयल, संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण), केंद्रीय विद्यालय संगठन

डॉ. ऋतु पल्लवी, सहायक आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन

सुश्री रत्ना पाठक, (सहायक शिक्षा अधिकारी) केंद्रीय विद्यालय संगठन

डॉ. सैयदा ऐमन हाशमी सनातकोत्तर शिक्षिका (अंग्रेजी) पीएम श्री के.वि., एंड्रयूजगंज

सुश्री झंझा चक्रवर्ती सनातकोत्तर शिक्षिका, (अंग्रेजी) पीएम श्री के. वि. क्र. 3, दिल्ली छावनी (द्वि. पा.)

श्री बसंत कुमार, सनातकोत्तर शिक्षक हिंदी पीएम श्री के. वि. क्र. 3, दिल्ली छावनी (द्वि. पा.)

जब शिक्षक प्रशिक्षित होते हैं...

तो कक्षाएँ जीवंत हो उठती हैं !

When Teachers Evolve...

Classrooms Come Alive !

From Concepts to Creativity: Redefining Teacher Training

Inaugural Address of T&D Week

Training and Development remain central to KVS's pursuit of excellence. In a rapidly changing world, our teachers are continually upskilling, embracing reflection, collaboration, and innovative classroom practices that ensure both scalability and sustainability of high-quality teaching-learning processes.

As education moves into a technology- and AI-integrated era, KVS teachers continue to serve as strong mentors who guide students holistically. Aligned with NEP 2020, the Sangathan is nurturing joyful, inclusive, and competency-based classrooms, strengthened by insights from SAFAL and PARAKH, especially in foundational literacy, numeracy, and assessment—while ensuring that these reforms are implemented with long-term sustainability and system-wide scalability.

Across school, regional, and national levels, training programmes promote inclusive pedagogy, experiential learning, art and sports integration, and vocational education, ensuring teachers stay equipped with contemporary approaches that can be scaled effectively across the system.

Training and Development Week is being celebrated as a vibrant platform that aims at showcasing innovation, fostering peer learning, and translating training into meaningful, sustainable classroom practices. I extend my heartfelt congratulations to all participating teachers whose dedication continues to enrich student learning and inspire the entire KVS community.

Prachi Pandey
Vice Chairperson, KVS
&
Joint Secretary, DoSEL

Message

Education systems flourish when teachers continue to learn, unlearn and relearn. In Kendriya Vidyalaya Sangathan, professional development is not an isolated event but a sustained process that strengthens classroom practice and leadership at every level. The initiatives documented in this magazine reflect the ceaseless efforts of our Regional Offices and ZIETs in designing purposeful, practice-oriented programmes that respond to changing learner needs and national priorities.

The Training and Development Week celebrated in October this year has further energised this mission by providing a common platform for reflection, innovation and sharing of best practices across the country. It has helped create professional communities that think together and grow together.

I commend all trainers, mentors and participating teachers for their commitment to excellence. May this compilation inspire continuous improvement and reaffirm our responsibility towards imparting quality education.

Vikas Gupta
Commissioner
Kendriya Vidyalaya Sangathan

Messages

With the implementation of the National Education Policy 2020, the focus has shifted to qualitative transformation in teaching–learning. Classrooms have evolved into dynamic learning hubs, enriched with innovative pedagogies, modern methodologies, and technological tools. Central to this change are our teachers, who, through continuous learning, have reinvented themselves and upgraded their skills to meet contemporary educational standards.

Kendriya Vidyalaya Sangathan has conducted extensive capacity-building programmes to empower teachers with advanced teaching strategies, digital tools, and innovative instructional practices. As a result, classrooms now foster creativity, collaboration, and experiential learning, where students actively engage in inquiry, experimentation, and creation.

Training and Development Week celebrates these efforts, providing teachers a platform to showcase exemplary practices, including foundational literacy and numeracy, inclusive lesson designs, innovative methods, and art-integrated learning.

This publication highlights these inspiring initiatives, motivating teachers to continue innovating and advancing the quality of education. Heartfelt congratulations to all participating teachers and appreciation to the organizing teams for this meaningful initiative.

With best wishes,
Chandana Mandal
Additional Commissioner (Academics)

Education is not merely the transfer of information; it is the expansion of an individual's sensitivity, discernment, and vision. It is a process of understanding the present through the experiences of the past and shaping the future. In a rapidly changing world, driven by new technologies, evolving thought, and emerging challenges, the teaching–learning process must remain equally alert and relevant. In this dynamic context, it is not optional for teachers to stay updated—it is their responsibility.

Teacher training programmes not only introduce educators to new techniques but also provide opportunities to embrace innovation, apply new practices, and cultivate a culture of self-reflection. These programmes transform learning into a vibrant experience, where inquiry replaces rote, and curiosity drives engagement. Training empowers teachers with confidence, competence, and foresight, deepening subject understanding and reimagining classrooms as laboratories of dialogue, exploration, and discovery.

By equipping teachers to adapt to evolving educational needs, training strengthens their ability to lead with assurance and skill. I am confident that nurturing our teachers' potential will shape the future of education for generations to come. The dedicated investments made today will lay the foundation for a resilient, insightful, and capable education system tomorrow.

With best wishes,
Nagendra Goyal
Joint Commissioner (Training)

Table of Contents

Inaugural Address of T&D Week........ 3

Commissioner's Message 4

Additional Commissioner's Message........ 5

Joint Commissioner's Message........ 5

About KVS Training Division........ 7

History of Training in KVS

Vision and Mission of KVS Training Division

Evolution of Training in KVS – Timeline

Structure and Mandate of the Training Division

Major Themes Guiding Training and Capacity Building in KVS

KVS Training Ecosystem Overview........ 13

Zonal Institutes of Education and Training (ZIETs)

ZIETs at a Glance in 2025-26

Focus Feature: Training & Development Week........ 16

Training & Development Week: A Natural Extension of KVS's Training Journey

A Legacy of Training that Shaped T&D Week

Key Events and Activities of T&D Week........ 20

Art-Integrated (Samriddhi) Competitions

FLN Lesson Plan

Inclusive Lesson Plan

Innovative Pedagogies

Webinars

Leadership Reflections: Shaping T&D Week........ 26

Where Teachers' Voices Lead the Way........ 27

Beyond Training & Development Week........ 28

Training Need Analysis (TNA) in KVS

Short-Duration Courses in KVS

Student Support Material

How Research Transformed Teaching in KVS

Creation of Teacher-Support Material & Training Manuals/Modules

Curating Excellence, Showcasing Innovation: KVS Training Division Publications........ 33

KVS Training Division: Exhibition

Acknowledgement........ 35

About KVS Training Division

History of Training in KVS

Training and professional development has been integral to Kendriya Vidyalaya Sangathan since its early years in 1960s. Recognising that teachers are the backbone of quality education, KVS began structured in-service training programmes as early as 1979, introducing a two-week format that laid the foundation for systematised capacity building across the organisation.

KVS soon emerged as a national leader in teacher training, and in 1987, when the Ministry of HRD mandated a 21-day in-service course linked to teachers' financial upgradation, KVS became the first school system to implement this model comprehensively. Its robust structure, academic rigour, and disciplined execution earned it national recognition, and for several years, other school systems across India sent their teachers to KVS to undergo the 21-day course, reflecting the Sangathan's reputation for excellence in professional development.

Over the years, the 21-day format underwent refinements to respond to emerging academic needs. In **2006**, the Academic Advisory Committee recommended splitting the 21 days into shorter components, integrating theoretical training with practical classroom-based sessions. This made the training more flexible and aligned it with on-ground teaching realities.

Further restructuring in **2009** created the **12+10-day split**, held during the summer and winter breaks, a format that continued for more than a decade and enabled large-scale, system-wide teacher training across KVS.

The landscape of teacher development began to shift once again with the arrival of the **National Education Policy (NEP) 2020**, which emphasises **50 hours of Continuous Professional Development (CPD) annually** for every teacher. With this, the traditional 21-day model, designed in the 1980s, began losing relevance in a fast-evolving educational ecosystem. NEP's focus on ongoing, interest-driven learning highlighted the need for a more dynamic, technology-enabled, year-round training system.

In response, KVS initiated a comprehensive review of its training framework. Expert consultations and internal discussions in 2024 unanimously recommended discontinuing the 21-day in-service every six years model and replacing it with **50 hours of CPD every year**, amounting to nearly **300 hours in six years**, a significant enhancement over the earlier 126-hour structure.

This shift marks a historic transformation in the professional learning culture of KVS. From periodic, centrally organised training to a continuous, decentralised, multi-modal CPD ecosystem, KVS has evolved its training philosophy to keep pace with contemporary educational demands.

The Training Division continues to play a pivotal role in guiding this evolution- strengthening structures, supporting ZIETs and Regional Offices, and ensuring that every teacher across the country receives meaningful, high-quality professional development.

Vision and Mission of KVS Training Division

VISION STATEMENT

Enabling KVS employees to function as true professionals in the field of school education through training.

MISSION STATEMENT:

Providing quality training to equip the Teachers and the Staff with knowledge, skills and attitude required for their professional development in Kendriya Vidyalaya Sangathan so that they contribute to the growth and development of students entrusted to their care.

Evolution of Training in KVS – Timeline

- **1979** – KVS introduces its first structured two-week in-service training programme.
- **1987** – 21-day in-service course mandated; KVS becomes the first to implement it nationwide.
- **2006** – 21-day model restructured into modular components combining theory and practice.
- **2009** – New **12 + 10 day** training format introduced for summer and winter sessions.
- **2020** – NEP 2020 mandates **50 hours of CPD annually** for every teacher.
- **2024–25** – KVS replaces the 21-day cycle with an annual **50-hour CPD framework**.

KVS: Translating NEP 2020's Vision into Practice

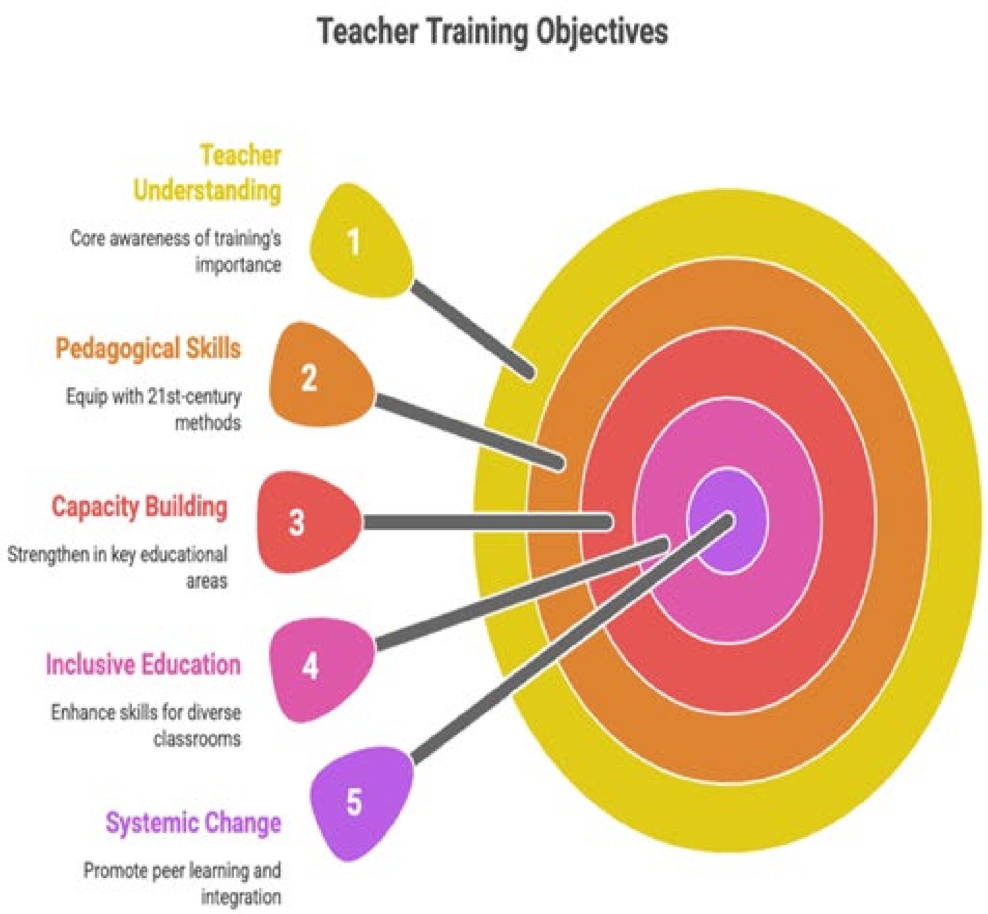

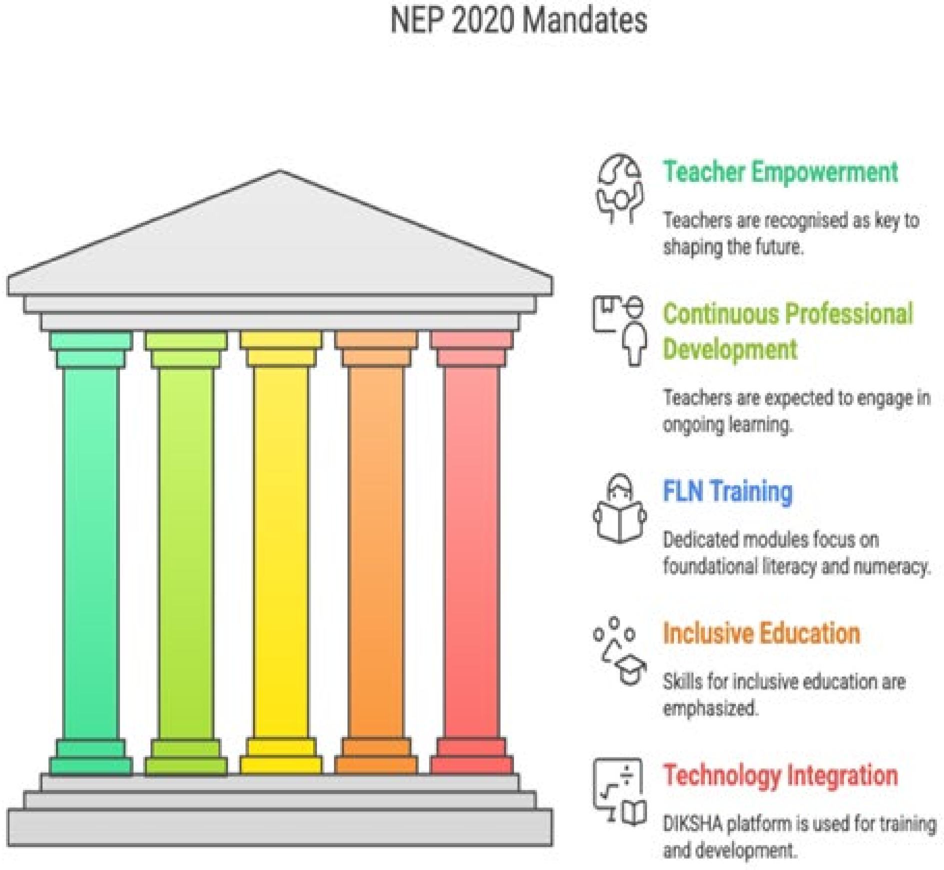

Structure & Mandate of the Training Division

The Training Division of Kendriya Vidyalaya Sangathan serves as the central coordinating body for professional development across more than a thousand Kendriya Vidyalayas spread throughout the country. Operating under the guidance of the Joint Commissioner (Training), the division is supported by the Assistant Commissioner (Training) and the Assistant Education Officer, who together ensure systematic planning, implementation, and monitoring of all training initiatives.

The division functions in close collaboration with the **Zonal Institutes of Education and Training (ZIETs),** the specialised training arms of KVS, and the **Regional Offices**, which act as crucial intermediaries in organising and delivering training at the field level. With ZIETs catering to specific clusters of regions and schools, and Regional Offices coordinating school-based programmes, the Training Division maintains a robust three-tier structure that reaches every teacher across the system.

The mandate of the Training Division includes:

Formulating policies and frameworks

- for teacher training in alignment with national directives such as NEP 2020.

Designing and overseeing large-scale training programmes

- including orientation courses, subject-specific training, leadership programmes, and capacity-building initiatives.

Ensuring the implementation of Continuous Professional Development (CPD)

- and guiding the transition from episodic in-service training to year-round professional learning.

Developing training materials, modules, handbooks, and digital content

- to support high-quality instructional practices.

Strengthening the training ecosystem

- through coordination with ZIETs, monitoring regional initiatives, and maintaining a consistent national vision across diverse geographical contexts.

Facilitating research, innovation, and documentation

- of best practices in pedagogy and professional development.

Creating systems for tracking, recognition, and validation

- of professional learning hours for academic and financial progression of teachers.

Through its strategic leadership, the Training Division ensures that professional development remains responsive, relevant, and forward-looking, empowering every teacher of KVS to deliver high-quality education and to continually grow as reflective practitioners.

Major Themes Guiding Training and Capacity Building in KVS

1. Foundational Literacy and Numeracy (FLN)

- *(NEP 2020 Para 2.1–2.9)* Strengthening foundational learning remains a national priority. Training in this area focuses on:
- Early years pedagogy
- Development of foundational reading, writing, and numeracy skills
- Use of age-appropriate learning materials and assessments
- Ensuring every child attains grade-level competencies

2. Pedagogical Interventions for Experiential Learning

- *(NEP 2020 Para 4.6–4.8)* Teachers are equipped to shift from rote learning to experiential, activity-based pedagogy through:
- Strategies for hands-on, inquiry-driven learning
- Real-life connections and problem-solving tasks
- Interdisciplinary and project-based approaches
- Engaging students as active participants in learning

3. Assessment Based on Competency-Based Learning (CBL)

- *(NEP 2020 Para 4.6 & 5.15)* Training emphasises assessment practices that reflect meaningful learning:
- Competency-based assessment design
- Formative, diagnostic, and personalised evaluation
- Use of rubrics, observation tools, portfolios
- Measuring learning outcomes rather than content recall

4. Inclusive Education

- *(NEP 2020 Para 6.1)* Teachers are trained to create inclusive classrooms where all learners thrive:
- Understanding diverse learning needs
- Differentiated instruction
- Barrier-free learning environments
- Sensitivity to socio-emotional needs of children

5. Leveraging Technology in the Classroom

- *(NEP 2020 Para 4.23)* KVS continues to integrate technology meaningfully in teaching-learning processes:
- Digital pedagogy and blended learning
- Use of ICT tools, DIKSHA, and MOOCs
- Creation and adaptation of digital content
- Enhancing student engagement through interactive platforms

6. Mental Health and Well-being of Students and Teachers

- *(NEP 2020 Para 4.28)* Well-being is central to quality education. Training programmes emphasise:
- Social-emotional learning and life skills
- Stress management and teacher wellness
- Building supportive classroom environments
- Strengthening teacher–student relationships

KVS Training Ecosystem Overview

Kendriya Vidyalaya Sangathan has established a robust, multi-level professional development ecosystem to ensure that every teacher and school leader receives meaningful and sustained training support. This ecosystem operates through coordinated roles played by KVS Headquarters, Zonal Institutes of Education and Training (ZIETs), Regional Offices, and Vidyalayas. Together, they form a dynamic and interconnected system that strengthens teaching-learning across the country.

Zonal Institutes of Education and Training (ZIETs)

ZIETs serve as the academic training hubs of KVS, responsible for designing and delivering zonal-level training programmes. They function as centres of excellence for pedagogical innovation, resource development, and leadership training. Each ZIET caters to 4–6 Regional Offices, ensuring that the professional development needs of teachers are addressed in contextually relevant and academically rigorous ways.

ZIETs play a pivotal role in translating the training vision of KVS into structured programmes that enhance classroom practice, strengthen leadership capacity, and promote reflective professional growth.

Feeder Regions of ZIETs

ZIET Bhubaneswar (Since 2012)	ZIET Chandigarh (Since 2009)	ZIET Gwalior (since 2002)	ZIET Mumbai (Since 2003)	ZIET Mysuru (Since 2003)
Bhubaneswar	Chandigarh	Agra	Ahmedabad	Bengaluru
Guwahati	Dehradun	Bhopal	Jaipur	Chennai
Kolkata	Delhi	Jabalpur	Mumbai	Ernakulum
Ranchi	Gurugram	Lucknow	Patna	Hyderabad
Silchar	Jammu	Varanasi	Raipur	
Tinsukia				

The professional development system of Kendriya Vidyalaya Sangathan operates through a coordinated set of responsibilities distributed across Headquarters, ZIETs, Regional Offices, and Vidyalayas. Each level plays a distinct yet interconnected role in ensuring high-quality training for all teachers and school leaders.

Training Ecosystem of KVS: HQ–ZIET–RO–Vidyalaya Linkages

KVS Headquarters (Training Division)

Role: Strategic Leadership & Policy Direction	**Key Functions:** Sets national vision and training priorities	Aligns professional development with NEP 2020	Designs frameworks, guidelines, and annual training calendars	Monitors implementation across all zones and regions

Zonal Institutes of Education and Training (ZIETs)

Role: Academic Resource & Innovation Hubs	**Key Functions::** Develops modules, handbooks, and training materials	Conducts subject-specific, pedagogical, and leadership programmes	Nurtures expert resource persons	Drives innovation and academic excellence within feeder regions

Regional Offices (ROs)

Role: Coordination & Field-Level Implementation	**Key Functions:** Facilitates school participation in trainings	Organises regional workshops and orientation programmes	Ensures rollout of HQ/ZIET training initiatives	Supports monitoring, reporting, and capacity building

Vidyalayas (Schools)

Role: Ground-Level Professional Learning	**Key Functions::** Conducts school-based CPD and collaborative learning activities	Implements training in real classroom contexts	Promotes reflective practice, peer learning, and innovation	Ensures continuous growth of teachers and improved student outcomes

Digital Monitoring: SAMAGAM Portal: KVS tracks and monitors all teacher-training programmes through the in-house SAMAGAM portal, enabling real-time reporting, attendance tracking, and consolidation of training data across the system.

ZIETS at a Glance in 2025-26

ZIET	Feeder Regions	Key Strength Areas	Major Programmes in 2025-26	Signature Initiatives
Bhubaneswar	Bhubaneswar, Guwahati, Kolkata, Ranchi, Silchar, Tinsukia	STEM, FLN, Safety & Legal Literacy, ICT, Olympiad Prep, Student Support Material (SSM) Development	STEM enrichment (Phy/Maths/Bio), FLN workshops, POCSO/ POSH/ school safety, Olympiad exposure (IIT/ NISER/IAPT), ICT for teachers & librarians	Olympiad Readiness Series, Digital training for librarians, Comprehensive School Safety Modules
Chandigarh	Chandigarh, Dehradun, Delhi, Gurugram, Jammu	Leadership, Assessment Reforms, Music Education, Reading Culture, SSM Development	Leadership courses for Principals/VPs/HMs, Assessment literacy & lab practices, School Band training, Reading-friendly school frameworks	21st Century Leadership Programme, Music & Band Training, Biology Assessment & Lab Practices
Gwalior	Agra, Bhopal, Jabalpur, Lucknow, Varanasi	Commerce–Economics, Social Sciences, Maths Pedagogy, Legal Literacy, SSM Development	Content Enrichment in Accountancy, Business Studies, Economics CPD, CBL workshops, Joyful learning, POSH/POCSO/ child rights	Commerce & Economics Enrichment Suite, CBL Lab Sessions, Leadership Modules
Mumbai	Mumbai, Ahmedabad, Jaipur, Patna, Raipur	ICT & Digital Pedagogy, Olympiad Prep, Interdisciplinary Arts, Mental Health, SSM Development	Content enrichment-Physics/Chemistry/ Maths, ICT/e-Granthalaya, Inclusive education & assistive tech, Interdisciplinary Arts–Science	Olympiad Training Series, ICT Teaching Suite, e-Granthalaya 4.0 Modernisation
Mysuru	Bengaluru, Chennai, Hyderabad, Ernakulam	SSM Development, FLN, Experiential Learning, Assessment Design	SSM Development (multiple subjects), Leadership training, Inclusive education, Mental health, Subject enrichment	SSM Development Workshops, Primary Leadership Excellence, Advanced Pedagogy Programmes

FOCUS FEATURE: TRAINING & DEVELOPMENT WEEK

Training & Development Week: A Natural Extension of KVS's Training Journey

As KVS's training system expanded and matured over the years, from structured in-service courses to modular formats and, eventually, to a continuous CPD framework, the need for a cohesive, organisation-wide platform for professional reflection became increasingly evident. The evolution of training practices highlighted that professional development was no longer an isolated activity conducted at intervals, but a sustained process woven into the everyday functioning of the Sangathan. With the introduction of NEP 2020 and its emphasis on ongoing learning, competency-based education, and teacher autonomy, KVS recognised the importance of creating a unified academic space that could bring its vast training ecosystem together.

It is in this context that Training and Development Week was conceived. The initiative reflects the shift from episodic training to a culture of collective professional growth. While the history of training in KVS charts the strengthening of structures, processes, and formats, T&D Week represents the emergence of a shared professional ethos across the organisation. It provides a dedicated period each year for teachers, school leaders, ZIETs, Regional Offices, and Headquarters to align their efforts, revisit priorities, and engage deeply with contemporary pedagogical expectations.

T&D Week therefore stands as a natural extension of KVS's training journey—a structured, system-wide pause that enables educators to review progress, identify learning needs, and realign themselves with national reforms and organisational goals. It embodies the idea that continuous development is not only a policy requirement but a defining characteristic of KVS as a learning organisation.

P1 — PURPOSE

- ***What T&D Week Seeks to Achieve***
  - Training & Development Week is dedicated to strengthening professional competencies across KVS. It aims to:
  - Build deeper pedagogical expertise
  - Enhance instructional and academic leadership
  - Promote reflective classroom practice
  - Encourage innovation and best practice sharing
  - Strengthen collaboration across schools and regions
  - At its core, the purpose is simple: empowered teachers create empowered learners.

P2 — PRIORITIES

- ***How T&D Week Aligns with KVS's Strategic Goals***
  - T&D Week reinforces KVS's commitment to quality education by focusing on:
  - Competency-Based Teaching & Learning
  - Digital Integration & Technology-Enabled Classrooms
  - Inclusive Education & Equity in Learning
  - Holistic Student Development
  - Teacher Wellness & Professional Ethics
  - Leadership for School Improvement
  - These priorities mirror key reforms under NEP 2020 and KVS's vision for future-ready schools.

P3 — PRACTICE

- ***What Happens Across the System During the Week***
  - The week is action-oriented, showcasing professional learning in diverse formats:
  - Workshops, demonstrations, model lessons
  - Webinars and expert interactions
  - Cross-regional collaborative sessions
  - Peer-learning forums and reflective circles
  - School-based CPD initiatives
  - These practices make T&D Week a vibrant, system-wide learning experience.

P4 — PHILOSOPHY

- ***The Spirit Behind T&D Week***
  - T&D Week embodies KVS's belief that:
  - Professional development is continuous
  - Learning is collaborative
  - Teachers are instructional leaders
  - Reflection drives improvement
  - Innovation is essential for excellence

A Legacy of Training that Shaped T&D Week

The year-wise rise in the number of teachers trained reflects the strong professional development legacy that shaped the vision of Training & Development Week. Over the past decade, KVS's training system has expanded in response to evolving educational needs. The sharp increase in 2020–21 marks the shift to large-scale online training during COVID-19, while the notable growth in 2024–25 corresponds to the implementation of the 50-hour CPD mandate, which encouraged teachers to attend multiple programmes. This upward trend signifies more than rising numbers—it highlights a deepening learning culture that laid the foundation for T&D Week as a celebration of continuous growth, reflection, and collaboration.

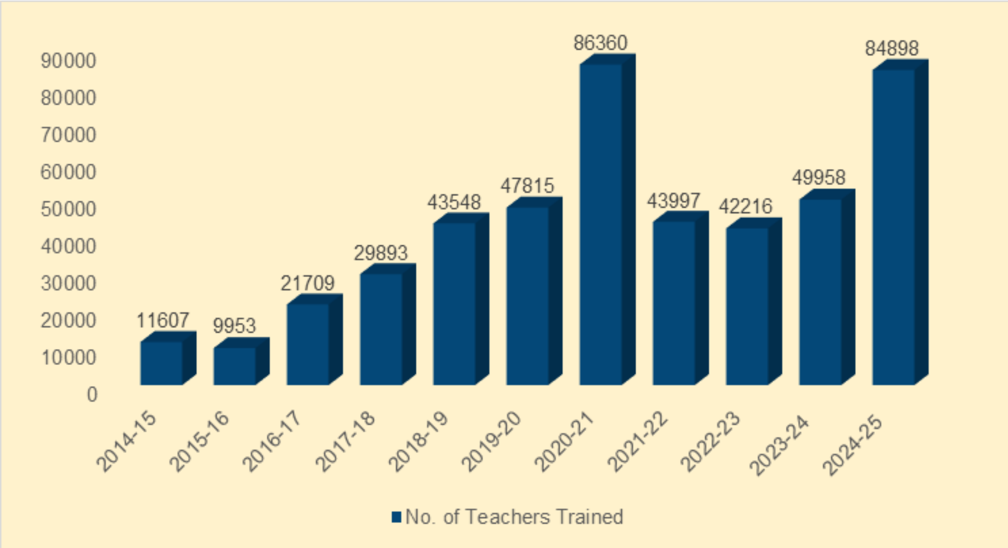

The themes selected for T&D Week competitions were shaped by the priorities emerging from KVS's annual thematic training data. The sharp rise in FLN training made foundational learning a natural focus, while growing participation in STEM, competency-based learning, digital technology, and mental health highlighted the need to promote innovative, tech-enabled, and learner-centred pedagogies. To strengthen experiential learning, Samriddhi—NCERT's national competition on art-integrated lessons and projects—was also included as a key component of T&D Week. Steady engagement in leadership and non-teaching training further justified the inclusion of diverse categories. Together, these competitions reflected real training trends and showcased the transformation that professional development has brought into KVS classrooms.

Over the years, KVS has consistently kept pace with the changing needs of society, often moving ahead of national trends in school education. At a time when many systems were still trying to interpret the implications of NEP 2020, KVS had already begun proactive capacity-building in emerging areas such as artificial intelligence, competency-based learning, and strengthening foundational literacy and numeracy. Most significantly, KVS embraced the spirit of NEP by pioneering the implementation of each year, ensuring that every teacher remains future-ready. This readiness to anticipate reforms rather than merely respond to them reflects KVS's enduring commitment to innovation, excellence, and the holistic development of its learners.

Thematic Training		
Theme	**2023-24**	**2024-25**
FLN	2463	12402
STEM Education	157	2719
CBL- CBA	330	2846
Mental Health	114	705
Leveraging Digital technology	4415	3704
Training of Non-teaching	4066	4502
Training of Leaders	449	544

Key Events and Activities of T&D Week

Training & Development Week brought together a vibrant range of professional learning activities designed to inspire reflection, innovation, and collaborative growth across KVS. Through creative competitions, lesson design initiatives, pedagogical exploration, and national-level webinars, teachers engaged deeply with contemporary educational priorities. The following highlights capture the diversity and richness of professional experiences that shaped this year's T&D Week.

Art-Integrated (Samriddhi) Competitions

Samriddhi Art-Integrated competitions provided teachers with a creative platform to reimagine teaching-learning processes through the integration of art forms into academic subjects. Participants designed learning experiences that blended visual arts, music, storytelling, theatre, and local crafts with curriculum objectives. The initiative encouraged cross-disciplinary thinking and promoted experiential learning in classrooms. Teachers showcased innovative lesson designs that made abstract concepts tangible and culturally relevant. These competitions also highlighted the role of creativity in enhancing student engagement and conceptual clarity. Overall, Samriddhi served as a powerful reminder that education becomes meaningful when knowledge relates to expression and imagination.

FLN Lesson Presentation

Art-integrated Lesson Presentation

Innovative Lesson Presentation

Artistry in Education: Celebrating Samriddhi's Best

FLN Lesson Plan

The Foundational Literacy and Numeracy (FLN) lesson plan initiative focused on strengthening teachers' capabilities in early-grade instruction. Educators developed structured lesson designs aimed at improving reading fluency, comprehension, number sense, and problem-solving skills. The activity emphasised age-appropriate pedagogy, learner diversity, and outcome-based planning. Teachers used innovative strategies such as storytelling, phonemic awareness techniques, interactive tasks, and formative assessment tools. The initiative encouraged alignment with national benchmarks for foundational learning while fostering reflective teaching practices. Through peer interaction and evaluation, teachers gained practical insights into designing impactful FLN lessons that address learning gaps effectively and systematically.

Winners of FLN Lesson Planning Competition

ZIET Bhubaneswar

Ms. Namrata Mishra, PRT

ZIET Chandigarh

Ms. Manisha PRT

ZIET Gwalior

Ms. Simran Juneja, PRT

ZIET Mumbai

Ms. Sarita PRT

ZIET Mysuru

Ms. Sreekala G, PRT

Ms. Shraddha Shukla, PRT

Ms. Swati Rai PRT

Inclusive Lesson Plan

The Inclusive Lesson Plan activity aimed at empowering teachers to create learning environments that accommodate diverse learner needs. Teachers conceptualised lessons that addressed varied abilities, learning styles, and socio-emotional needs within the classroom. Emphasis was placed on universal design for learning, differentiated instruction, and accessibility strategies. Participants demonstrated how curricular goals could be met through flexible teaching methods and multiple modes of engagement. The activity also sensitised teachers to the importance of equity and empathy in education. By sharing inclusive methodologies and classroom practices, the initiative fostered a mindset that celebrates diversity and ensures that every learner receives meaningful educational opportunities.

Winners of Inclusive Lesson Planning

ZIET Bhubaneswar
- Ms. SONALI DE (PRT)

ZIET Chandigarh
- MR. RAJESH VASHISTH, TGT ENGLISH

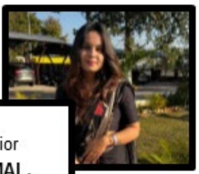

ZIET Gwalior
- MS. KOMAL, PRT

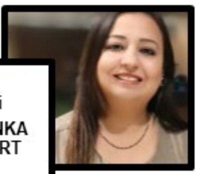

ZIET Mumbai
- MS PRIYANKA NAYANI, PRT

ZIET Mysuru
- MS. SMITA, HM
- MR. BHUVNESH, PRT
- MS. PRAGATI PRAJAPATI, PRT
- MS. VAISHALI SONI, TGT

Innovative Pedagogies

The sessions on innovative pedagogies encouraged teachers to explore modern instructional strategies beyond conventional approaches. Focus areas included experiential learning, project-based instruction, inquiry-led teaching, and blended learning models. Teachers presented creative classroom practices that promoted critical thinking, collaboration, and problem-solving among students. Emphasis was laid on adapting pedagogy to meet learners' cognitive and emotional needs while fostering curiosity and independent learning. These interactions enabled educators to exchange practical ideas that are directly applicable in classrooms. The initiative nurtured a culture of experimentation and reflection, reinforcing the belief that innovation in teaching is essential for cultivating future-ready learners.

Winners of Innovative Pedagogies

ZIET Bhubaneswar Mr. TARUN KUMAR DASH(PRT)	ZIET Chandigarh Ms. BHAWNA SHARMA, PRT	ZIET Gwalior Mr. ANKIT RAJPUT, PRT (Music)	ZIET Mumbai Ms. SONALI RANA, PRT	ZIET Mysuru MS. C. SESHA KUMARI, PRT, MR. NEERAJ YADAV, PRT, MS. MADHU, PRT

Webinars

During Training & Development Week, a series of national-level webinars conducted by NCERT enriched teachers' professional perspectives. On **9th October 2025**, the webinar on *Jaadui Pitara* introduced educators to activity-based foundational learning resources designed to make classrooms joyful and engaging. On **10th October 2025**, the session on *ICT Integration* highlighted the effective use of digital tools for teaching, assessment, and student engagement. The webinar on *Action Research* held on **11th October 2025** guided teachers in identifying classroom challenges and systematically improving practices through research-based interventions. Together, these sessions strengthened instructional competence and reflective teaching.

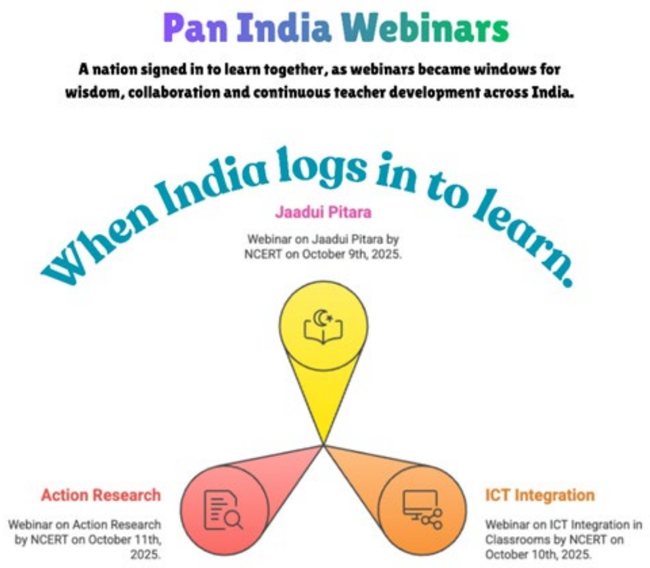

Webinar on Jaadui Pitara

Webinar on Techno- Pedagogy Integration in Teaching

Webinar on Action Research

Leadership Reflections: Shaping T&D Week

Throughout the week, teachers from our feeder regions participated in different activities like presentation of Art & Technology-Integrated lesson plans/projects under Samriddhi, FLN Lesson Plans and innovative pedagogical practices in grades 1 to 5, Inclusive education-related presentations, with focus on CwSN and equitable learning, mental health and well- being related projects, interaction with eminent educationists and attending a series of webinars conducted by NCERT. All the activities were planned and conducted with the aim of enhancing teaching methodologies, integrating innovative technologies, and strengthening classroom engagement.

Dr Anurag Yadav
Director
KVS ZIET Bhubaneshwar

A special highlight of the week was the inclusion of Art Integrated Presentations under the Samridhhi Programme of NCERT, which enriched the celebrations by blending creativity with pedagogy. These presentations demonstrated how art can be a powerful medium to foster emotional intelligence, cultural awareness, and experiential learning. By integrating artistic expression into teaching, our educators showcased the potential of holistic approaches that nurture both intellect and imagination.

Shruti Bhargava
Director
KVS ZIET Chandigarh

During this Training and Development Week, the competitions, discussions, and presentations that were organized reflected a wonderful blend of enthusiasm, participation, and innovation. Each participant not only shared their own ideas but also demonstrated an exceptional ability to learn from the experiences of others. Both our trainers and participants emerged as the true heroes of this Training and Development Week. They showed that learning is a journey that is complete only when we move forward together, carrying others along with us.

B.L. Marodia
Director
KVS ZIET Gwalior

The event successfully strengthened the culture of innovation, collaboration, and inclusivity among educators. It not only celebrated creative excellence but also inspired participants to continue evolving as reflective practitioners and champions of transformative pedagogy. The learnings and experiences gained during these three days will undoubtedly contribute to enriching classroom practices, enhancing student learning outcomes, and advancing the collective mission of quality education within the Kendriya Vidyalaya Sangathan.

B.K. Behera
Director(Additional Charge)
ZIET Mumbai

Throughout the week, educators from all four regions—Bengaluru, Chennai, Ernakulam, and Hyderabad—came together to share, collaborate, and celebrate best practices across diverse pedagogical domains such as Inclusive Education, Foundational Literacy and Numeracy (FLN), Experiential Learning, Art Integration, and Sustainable Practices. The week-long celebration not only showcased creativity and innovation but also reaffirmed our shared mission—to make learning equitable, joyful, and meaningful for every child.

Meenaxi Jain
Director
KVS ZIET Mysuru

Where Teachers' Voices Lead The Way

I had the privilege of representing Kendriya Vidyalaya Sangathan, Chennai Region at the zonal level, where I showcased the best practices of my school. While presenting at the common forum at the ZIET level, I was able to witness the best practices being implemented in the feeder regions as well. This exposure offered valuable enrichment, broadened my understanding, and helped me learn from the diverse and effective practices across different regions. It provided new insights that I can adapt and implement in my own school.

Mrs. Amutha J.
Headmistress, PM SHRI KV No. 2, Madurai

I am delighted to share my feedback as a participant in the Training and Development Week 2025, the session held on 07/10/2025 on the theme *Innovative Pedagogical Practices* and my topic was Jolly Phonics. The session was highly engaging and provided valuable exposure to new-age classroom strategies that make learning more meaningful, joyful, and student-centred. The competition emphasized the development of low-cost TLMs and the use of real-life examples to make abstract concepts easier for students to understand. We also explored peer learning and reflective teaching as effective tools for strengthening classroom interaction and ensuring active participation from all students.

Bhawna Sharma
PRT
KV Samba
Jammu Region

I am pleased to share my feedback as a participant in the Training and Development Week 2025, particularly the session held on 07/10/2025 on the theme of *Foundation Literacy and Numeracy*. The session was highly informative, engaging, and aligned with the national focus on strengthening foundational skills in early learners as per the NEP 2020 guidelines. A key takeaway was the focus on competency-based assessment, which helps in tracking real learning rather than rote memorization. The session empowered us with practical tools, classroom management ideas, and engaging techniques that can be immediately implemented in our classrooms to improve outcomes in both literacy and numeracy.

Manisha
PRT
PM Shri K.V. Khatima
Dehradun Region

Together with Music Teacher Mrs. Mridula Nagda, I presented an Art Integrated Pedagogy Project titled "Learn Biology with Art, Technology, Music and Dance." We selected the topic Ecosystem and composed as well as choreographed a song with dance movements related to the theme. This competition helped me gain valuable insights into effective time management, confidence building, and public speaking skills. It also provided a wonderful opportunity to interact with like minded individuals and learn from their experiences.

Sheeba.K.M
PGT Biology
PM SHRI KV2
Vasco, Goa

Beyond Training & Development Week

Training Need Analysis (TNA) in KVS

ZIET Mumbai

Universal Objective: Strengthening Professional Development in KVS **TNA ensures targeted training, high-quality programmes, and empowered teachers—strengthening KVS's learning culture system-wide.**		
Organisation	Training Programme	Teacher
TNA ensures that every training initiative across KVS is **meaningful, aligned, and impact oriented**. It helps identify real needs, design focused programmes, and optimise resources across HQ, ZIETs, ROs, and schools. No guesswork. No duplication. No irrelevant training.		
Organisation • Aligns training with **KVS goals & reforms** • Builds a **future-ready workforce** • Ensures uniform standards across regions • Supports NEP 2020 & digital transformation • Enables efficient use of time, effort & resources	Training Programme • Becomes **relevant, focused & learner-centric** • Helps determine **what method fits best** (workshop, online, experiential) • Ensures high-quality content & delivery • Leads to measurable improvement in training outcomes • Supports continuous enhancement of programme design	Teacher • Addresses **real professional needs** • Strengthens skills, confidence & readiness • Helps adapt to new technologies & pedagogy • Encourages reflective practice & growth mindset • Improves classroom performance & student learning
How TNA Works (Process Overview) Organisational Analysis → Job/Task Analysis → Skill-Gap Identification → Prioritisation→ Training Plan Development → Evaluation & Feedback		
TNA 2025–26 at a Glance		
• **12 Mar 2025:** ZIET Mumbai submitted TNA to KVS HQ	• Shared with ZIETs → Regions → Schools for data collection	• **20 Mar 2025:** Inputs from 5 regions analysed → Training Calendars revised & finalised
TNA ensures targeted training, high-quality programmes, and empowered teachers—strengthening KVS's learning culture system-wide.		

Short-Duration Courses in KVS

ZIET Bhubaneswar

Purpose

- Short-duration courses strengthen teachers' professional growth by offering focused, efficient, need-based training. They support all cadres and can be delivered in-house or with external partners.

Why They Are Needed

- Driven by NEP 2020 reforms:
  - Experiential learning
  - Innovative pedagogies
  - Competency-based education
  - Inclusive education
  - Emerging technologies

What These Courses Offer

- Learning opportunities in new areas
- Updated curriculum knowledge
- Awareness of new strategies & technologies
- Support to meet curricular demands

How ZIETs Plan them

- ZIETs collect and analyse cadre-wise training needs annually, designing calendars that include:
  - Induction training
  - Continuous upskilling
  - Retraining
  - ICT & AI integration

How Courses Are Designed

- Collaborative strategies
- Interactive sessions
- Hands-on activities & demos
- Technology integration
- E-manuals & post-training support
- **Outcome:** Active engagement + improved classroom practice.

Overall Impact

- Short-duration courses foster reflection, collaboration, confidence, and 21st-century readiness—enhancing teaching quality and student learning outcomes.

Short-duration courses keep KVS teachers updated, skilled, and responsive to changing educational needs. They strengthen classroom practice and support a culture of continuous professional growth.

Student Support Material

ZIET Mysuru

Student Support Material (SSM) enriches the teaching–learning process by offering clear, structured, and simplified content that supports learners at every level. Designed to make key concepts easy to grasp, SSM reinforces classroom learning through brief explanations, essential definitions, diagrams, solved examples, and focused practice. Its brevity is purposeful, helping struggling learners avoid overload, while giving high achievers a quick and powerful revision tool. In this way, SSM becomes both a bridge and a booster, meeting diverse learning needs within the same classroom.

For the academic session 2025–26, the preparation of SSM for Classes IX to XII was entrusted to the ZIETs, as decided in the Advisory Committee Meeting (21–22 February 2025). Responsibilities were distributed subject-wise among the five ZIETs to ensure expertise, quality, and uniformity.

ZIET Bhubaneswar
- English Lang. & Lit. (IX–X)
- SociologyEconomics (XI–XII)

ZIET Chandigarh
- Hindi, Sanskrit (IX–X)
- Hindi Core, Accountancy, Business Studies (XI–XII)

ZIET Gwalior
- Social Science, Science (IX–X)
- GeographyChemistry, Biology, Political Science (XI–XII)

ZIET Mumbai
- English Core, Computer Science, Information Practices, Biotechnology (XI–XII)

ZIET Mysuru
- Mathematics, Artificial Intelligence (IX–X)
- Mathematics, Applied Mathematics, Physical Education, History, Physics (XI–XII)

All SSMs follow CBSE guidelines, NEP 2020, and NCF 2023, ensuring relevance, accessibility, and high academic value. By bringing essential learning within every student's reach, SSM strengthens understanding, confidence, and overall achievement.

How Research Transformed Teaching in KVS: A Before–After Journey

ZIET Chandigarh

BEFORE: Traditional Classroom Challenges	AFTER: ZIET-Led Research Transforming Classrooms
1. Limited Innovation- Teaching relied on fixed methods, leaving little room for creative, contextual solutions.	**1. Innovation Becomes Routine-** Teachers now pilot and refine experiential, inquiry-based, collaborative, and competency-based pedagogies.
2. Learner Needs Not Deeply Analysed- Learning gaps and behaviour patterns were observed but not systematically studied.	**2. Insightful Understanding of Learners-** Action research helps identify gaps, study behaviours, design interventions, and measure impact.
3. Assessment Focus on Marks- Summative assessments dominated; tools for diagnostic, formative insights were limited.	**3. Assessment for Learning- -** Rubrics, peer assessments, and learning-outcome trackers strengthen formative, diagnostic feedback.
4. Technology Used Sparingly- Digital tools were add-ons, not thoughtfully integrated into pedagogy.	**4. Purposeful Digital Integration-** AI tools, simulations, blended strategies, and multimedia supports are tested and integrated thoughtfully.
5. Uniform Teaching for Diverse Learners- One-size-fits-all strategies made it difficult to support varied abilities and learning styles.	**5. Truly Inclusive Pedagogy-** Differentiated instruction, socio-emotional support, and inclusive strategies improve participation and belonging.
6. Minimal Collaboration- Sharing of ideas was informal; effective practices were rarely documented or scaled.	**6. Collaborative Professional Culture-** Workshops, peer review, and sharing of findings build a system-wide community of learning.
7. Decisions Without Evidence- Teaching and school processes often grew from habit rather than data or research.	**7. Evidence-Based Decisions-** Strategies, training modules, and school processes now rely on classroom-based data and research insights.

Creation of Teacher-Support Material & Training Manuals/Modules

ZIET Gwalior

To ensure teachers receive high-quality academic support, KVS follows a well-orchestrated process that starts with policy alignment, draws on expert insight, develops robust training materials, and integrates them into classrooms across the country.

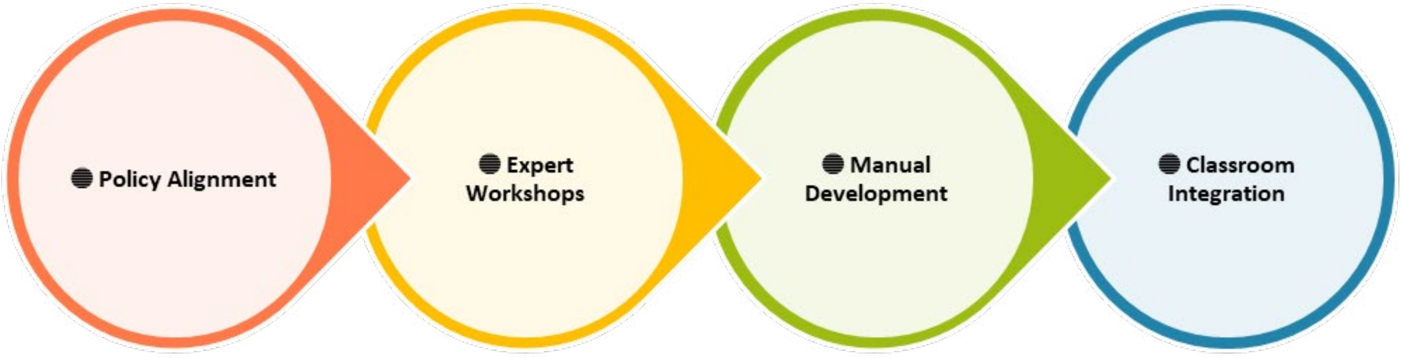

- Aligned with **NEP 2020**, **NCF**, **CBSE**, and **NCERT** guidelines to maintain national standards and uniformity.
- ZIET Directors, subject experts, Principals, Vice-Principals, and experienced teachers collaborate through structured workshops.
- Creation of **Report-cum-Reference Manuals** with objectives, methodology, resource mapping, session plans, activities, and reading material.
- Teacher-Support Materials and Manuals become daily teaching aids, strengthening pedagogy, CPD, and classroom practice across KVS.

Training Manuals/Modules

- Structured resources for professional development, including:
- **Safety Manuals**
  Safe School Protocols • Positive Classroom Management
- **Induction Manuals**
  KVS rules, systems, and core pedagogy for new teachers
- **Refresher Modules**
  Advanced subject concepts • Language Teaching (LT) • Inclusion strategies (CWSN)
- **Management Manuals**
  School financial management • Performance appraisal systems
- **These Manuals ensure standardised, high-quality training**

Teacher-Support Materials (Classroom Aids)

- Practical, ready-to-use resources that support effective classroom delivery:
- **Graded Worksheets** (X & XII)
  Practice questions, competency-based items, suggested solutions
- **Activity Books**
  Experiential learning tasks • Art & Sports Integrated activities
- **Competency-Based Materials**
  Classroom practice aligned with CBE frameworks
- **Together, these materials help teacher translate curriculum goals into clear, engaging, and learner-centred classroom practices.**

Through this structured, collaborative process, KVS ensures that teachers nationwide receive updated, high-quality academic resources—reinforcing KVS's role as a national pace-setter in educational excellence.

Curating Excellence, Showcasing Innovation: KVS Training Division Publications

ZIET Gwalior

As part of its commitment to professional development and academic excellence, the KVS Training Division documents impactful practices and publishes high-quality academic resources. These publications capture classroom innovations, research insights, and exemplary pedagogical models, serving as valuable references for teachers and school leaders across the country.

Key Publications

1. Purposive Pedagogical Practices (PPP) Series: Showcases exemplary practices from KVS classrooms.

- *Kislay – Vol II:* Best FLN practices
- *Focus on CwSN – Vol III:* Inclusive classroom strategies
- *Pustakayan – Vol IV:* Creative library activities

2. Navonmesh – Journal of the Training Section: A platform documenting innovative pedagogy, action research, and teacher-led initiatives.

3. Foundational Learning Resources: Structured phonics workbooks supporting systematic early literacy instruction.

- *Phonics Workbook Vol I (Class I)*
- *Phonics Workbook Vol II (Class II)*

4. Training Modules and Manuals: Standardised resources for capacity-building across KVS.

- *Developing Capacities in Language & Literacy at Foundational Stage*
- *Induction Courses 2024* for newly recruited teachers

These publications together:

Strengthen classroom practice • Support reflective, research-based teaching • Provide structured academic resources

• Highlight KVS's leadership in educational reform • Preserve best practices for future scaling.

Kislay: Purposive Pedagogical Practices-Vol II (Best FLN Practices)

Navonmesh: a Journal by KVS Training Section

Focus on CwSN: Purposive Pedagogical Practices- Vol III

Workbook on Phonics-Vol I: For Class I

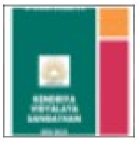

Workbook on Phonics-Vol II: For Class II

Developing Capacities in Language & Literacy at Foundational Stage (Training Module)

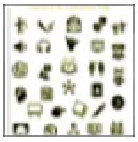

Induction Courses 2024

Pustakayan: Library Activities in KVS: PPP- Vol IV

KVS Training Division: Exhibition

A significant milestone in the KVS Training Division's ongoing journey is the comprehensive showcase of its capacity-building initiatives through a thoughtfully curated display. The exhibit brought together a wide array of training resources, pedagogical innovations, and evidence of professional development outcomes, reflecting the depth and diversity of efforts undertaken to strengthen teacher competencies. Designed to present a clear, cohesive view of continuous progress, the display drew widespread attention for effectively showing how sustained training initiatives translate into meaningful transformation in classrooms.

The Training Division's presence at the KVS Foundation Day Exhibition 2024 drew widespread attention through a thoughtfully curated stall that captured the depth and diversity of KVS's professional development efforts. The multi-panel display—featuring evidence-based training outcomes, thematic initiatives, best pedagogical practices, and capacity-building achievements—offered visitors a comprehensive view of how training translates into classroom transformation. Alongside vibrant exhibits of teaching-learning resources, activity kits, and training modules, the stall also highlighted the pivotal contributions of KVS's knowledge partners, acknowledging their role in strengthening innovation, digital integration, and pedagogical excellence across the system. The stall received warm appreciation for its clarity, creativity, and rich documentation, effectively showcasing KVS's legacy of teacher training and its forward-looking vision for continuous professional development.

Highlights and Initiatives of KVS Training Division at the 2024 Foundation Day Exhibition

ACKNOWLEDGEMENT

The Training Division gratefully acknowledges the guidance and support of Mr. Vikas Gupta, IAS, Commissioner, KVS, Ms. Chandana Mandal, Additional Commissioner (Acad.), and Mr. Nagendra Goyal, Joint Commissioner (Training), whose leadership inspired the development of this souvenir. Special appreciation is extended to Dr Ritu Pallavi, Assistant Commissioner, for conceptualising the publication, and to Ms. Ratna Pathak, Assistant Education Officer, for coordinating, shaping, and designing it with exceptional commitment. We also thank Dr Sayyada Aiman Hashmi, Ms. Jhanjha Chakravarty, and Mr. Basant Kumar for their valuable contributions in writing, editing, and proofreading. This collaborative effort reflects the shared dedication that drives the Training Division's work across KVS.

Vikas Gupta, IAS, Commissioner, KVS

Chandana Mandal, Additional Commissioner (Acad.), KVS HQ

Nagendra Goyal, Joint Commissioner (Training), KVS HQ

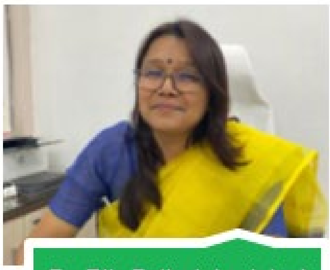

Dr. Ritu Pallavi, Assistant Commissioner, KVS HQ

Ratna Pathak, Assistant Education Officer, KVS HQ

Dr. Sayyada Aiman Hashmi, PGT (Eng.), PM SHRI KV Andrewsganj

Jhanjha Chakravarty, PGT (Eng.), PM SHRI KV 3, Delhi Cantt.

Basant Kumar, PGT (Hindi), PM SHRI KV 3, Delhi Cantt.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Transforming Teaching, Enriching Learning: T&D Week Souvenir

STRENGTHENING PROFESSIONAL LEARNING ACROSS KVS